पुनना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-X
Hindi
Specimen-Copy
Aug -Sept
2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अगस्त	पद्य पाठ-३-बिहारी के दोहे	बिहारी
०२		गद्य पाठ-११- डायरी के पन्ने	सीताराम सेकसरिया
०३		गद्य पाठ-१२-तनतारा -वमिरो	लीलाधर मंडलोई
		व्याकरण-पदबंद,समास लेखन-अनुच्छेद पत्र-	
०४		गद्य-पाठ-१३-तीसरी कसम	प्रहलाद अग्रवाल
०५		पद्य-पाठ-४-मनुष्यता	मैथलीशरण गुप्त
०८		व्याकरण-समास,वाक्य लेखन—पत्र-चित्र –लेखन	
०९	सितम्बर	पाठ-५-पर्वत प्रदेश में पावस	सुमित्रानंदन पन्त
१०		व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय संवाद-लेखन, विज्ञापन	

गद्य-पाठ- डायरी का एक पन्ना

लेखक परिचय

लेखक - सीताराम सेकसरिया

जन्म - 1892 (राजस्थान -नवलगढ़)

मृत्यु - 1982

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ के लेखक सीताराम सेकसरिया आज़ादी की इच्छा रखने वाले महान इंसानों में से एक थे। वह दिन प्रतिदिन जो भी देखते थे-,सुनते थे और महसूस करते थे ,उसे अपनी एक निजी डायरी में लिखते रहते थे।इस पाठ में उनकी डायरी का 26 जनवरी 1931 का लेखाजोखा है जो उन्होंने खुद अपनी डायरी में लिखा था।

लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था,जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। सिर्फ़ इस दिन को मानाने के प्रचार में ही दो हज़ार रूपये खर्च हुए थे। सभी मकानों पर भारत का राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे उन्हें स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे।पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पुरे शहर में पहरे लिए घूम घूम कर प्रदर्शन कर रही - थी।न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घुमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध किया गया था।

स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो चार आदमियों के सर फट गए।मारवाड़ी बालिका विद्यालय की - लड़कियों ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी मदालसा बजाज -नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को उत्सव

का मतलब समझाया।दो -तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे। सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी)उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था (परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज 26 जनवरी 1931 तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। एक ओर पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक अमुक धारा के अनुसार कोई भी-, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। अगर किसी भी तरह से किसी ने सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था।ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की और निकले।जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे मातरम बोलते जा रहे थे।इस तरफ इस तरह - का माहौलथा और दूसरी तरफ स्मारक केनिचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू को भी पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठा कर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ वहाँ से जन समूह बना कर आगे बढ़ने लगी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई।पुलिस बीच बीच में लाठियाँ चलना शुरू कर देती थी। इस बार भीड़ ज्यादा थी तो - आते जुलूस टूट गया और लगभग - आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आते 50 से 60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गई।उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। और भी कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया।मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था। बाद में रात नौ बजे सबको छोड़ दिया गया था। कलकत्ता में इस से पहले इतनी स्त्रियों को एक साथ कभी गिरफ़्तार नहीं किया गया था।डॉक्टर दासगुप्ता उनकी देखरेख कर रहे थे और उनके फोटो खिंचवा रहे थे। उस

समय तो 67 आदमी वहाँ थे परन्तु बाद में 103 तक पहुँच गए थे।
इतना सबकुछ पहले कभी नहीं हुआ था ,लोगों का ऐसा प्रचंड रूप पहले किसी ने नहीं देखा था। बंगाल या कलकत्ता के नाम पर कलंक था की यहाँ स्वतंत्रता का कोई काम नहीं हो रहा है। आज ये कलंका काफी हद तक धूल गया और लोग ये सोचने लगे कि यहाँ पर भी स्वतंत्रता के विषय में काम किया जा सकता है।

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर-

Q1- इस कहानी के लेखक कौन हैं ?

A) सीताराम
B) सेकसरिया
C) सीताराम सेकसरिया
D) कोई नहीं

Q2- सीताराम सेकसरिया का जन्म कब हुआ ?

A) १८९२ में
B) १८९१ में
C) १८९० में
D) कोई नहीं

Q3- सीताराम सेकसरिया का जन्म कहाँ हुआ था ?

A) राजस्थान के नवलगढ़ में
B) राजस्थान के चूरू में
C) राजस्थान के सीरत में
D) कोई नहीं

Q4- लेखक ने पढ़ना लिखना बिना स्कूल गए कैसे सीखा ?

A) स्वध्याय से
B) गुरु से
C) माता पिता से
D) कोई नहीं

Q5- लेखक को पदम श्री से कब सम्मानित किया गया ?

A) १९६२ में

B) १९६१ में

C) १९७१ में

D) कोई नहीं

Q6- डायरी का पन्ना कहानी कब लिखी गई ?

A) २६ जनवरी १९३१ को

B) २६ जनवरी १९३२

C) २६ जनवरी १९३३

D) कोई नहीं

Q7- लेखक की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) मन की बात

b) नई याद

C) एक कार्यकर्त्ता की डायरी

d) सभी

Q8- लेखक की भाषा पर दूसरी कौन सी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है ?

A) बांग्ला

B) कन्नड़

C) तेलगू

D) सभी

Q9- लेखक ने तत्सम और तदभव शब्दों के साथ कौन से शब्दों का प्रयोग किया है ?

A) देशज

B) विदेशी

C) अलंकारित

D) सभी

Q10- लेखक की रचनाओं में किस शैली का अधिक प्रयोग हुआ है ?

A) आत्मकथात्मक

B) अलंकारित

C) उपमायुक्त

D) सभी

⁎-प्रश्नोत्तर-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर(25 -30 शब्दों में लिखिए

प्रश्न 1 -: 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या क्या तैयारियाँ की गईं-**?**

उत्तर :-26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए काफ़ी तैयारियाँ की गयी थीं। केवल प्रचार पर ही दो हज़ार रूपए खर्च किये गए थे। कार्यकर्ताओं को उनका कार्य घर घर जा कर - जगह झंडे लगाए गए थे। कई स्थानों पर जुलूस - समझाया गया था। कलकत्ता शहर में जगह निकाले जा रहे थे और झंडा फहराया जा रहा था। टोलियाँ बना कर लोगो की भीड़ उस स्मारक के नीचे इकठ्ठी होने लगी थी ,जहाँ सुभाष बाबू झंडा फहराने वाले थे और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने वाले थे।

प्रश्न 2 -: 'आज जो बात थी ,वह निराली थी '- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: आज का दिन निराला इसलिए था क्योंकि आज के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस साल भी फिर से वही दोहराया जाना था। सभी मकानों पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और बहुत से मकान तो इस तरह सजाए गए थे जैसे हमें स्वतंत्रता मिल गई हो। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी, उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचने की कोशिश में लगी हुई थी।

प्रश्न 3 -: पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर है **?**

उत्तर :-पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। यदि कोई सभा में जाता है तो उसे दोषी समझा जायेगा। कौंसिल की ओर से नोटिस निकला था कि स्मारक के निचे ठीक चार बजकर चैबीस मिनट पर झंडा फहराया

जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। इस तरह दोनों नोटिस एक दूसरे के विरुद्ध थे|

प्रश्न 4 -: धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया ?
उत्तर :-जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की और चल पड़ी परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया ,कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ पहले तो वहीँ धर्मतल्ले के मोड़ पर ही बैठ गई। बाद में उन्हें पुलिस पकड़ कर ले गई। इस कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आ कर जुलूस टूट गया।

प्रश्न 5 -: डॉ .दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की क्या वजह हो सकती थी ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर :-डॉ .दास गुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे ,उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खिचवाने की दो वजह हो सकती थी। एक तो यह कि अंग्रेजों के अत्याचारों का खुलासा किया जा सकता था कि किस तरह उन्होंने औरतो तक को नहीं छोड़ा। दूसरी वजह यह हो सकती है कि बंगाल या कलकत्ता पर जो कलंक था कि वहाँ स्वतंत्रताके लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है के लिए कोई काम नहीं हो रहा है, इस कलंक को कुछ हद तक धोया जा सकता था और साबित किया जा सकता था कि वहाँ भी बहुत काम हो रहा है|

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50 -60 शब्दों में) दीजिए

प्रश्न 1 -: सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी ?

उत्तर :-सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की बहुत महत्पूर्ण भूमिका थी। स्त्रियों ने बहुत तैयारियां की थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर

पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी। स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी।सुभाष बाबू धर्मतल्ले के मोड़ पर आते -आते जुलूस टूट गया और लगभग 50 से 60 स्त्रियाँ वही मोड़ पर बैठ गई। उन स्त्रियों को लालबाज़ार ले जाया गया। मदालसा जो जानकीदेवी और जमना लाल बजाज की पुत्री थी ,उसे भी गिरफ़्तार किया गया था। उससे बाद में मालूम हुआ की उसको थाने में भी मारा गया था। सब मिलकर 105 स्त्रियों को गिरफ्तार किया गया था|

प्रश्न 2 -: जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई ?

उत्तर :-जब सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके पुलिस ले गई तो स्त्रियाँ जुलूस बना कर जेल की और चल पड़ी। उनके साथ बहुत बड़ी भीड़ भी इकठ्ठी हो गई। परन्तु पुलिस की लाठियों ने कुछ को घायल कर दिया, कुछ को पुलिस गिरफ्तार करके ले गई और बची हुई स्त्रियाँ वहीँ धर्मतल्ले केमोड़ पर बैठ गई।भीड़ ज्यादा थी तो आदमी भी ज्यादा जख्मी हुए। कुछ के सर फ़टे थे और खून बह रहा था|

प्रश्न 3 -: 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन ज़ोर किस के द्वारा लागू किये गए कानून को भंग करने की बात कही गई है ? क्या कानून भंग करना उचित था ? पाठ के सन्दर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर :-यहाँ पर अंग्रेज प्रशासन द्वारा सभा ना करने के कानून को भंग करने की बात कही है। ये कानून वास्तव में भारत वासियों की स्वतंत्रता को कुचलने वाला कानून था अतः इस कानून का उलंघन करना सही था। उस समय हर देशवासी स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था और अंग्रेजी हुकूमत ने सभा करने ,झंडा फहराने और जुलूस में शामिल होने को गैरकानूनी घोषित कर दिया था। अंग्रेजी प्रशासन नहीं चाहता था कि लोगो में आज़ादी की भावना आये परन्तु अब हर देशवासी स्वतन्त्र होना चाहता था। उस समय कानून का उलंघन करना सही था।

प्रश्न 4 -:बहुत से लोग घायल हुए,बहुतों को लॉकअप में रखा गया ,बहुत सी स्त्रियाँ जेल गई ,फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार से यह सब अपूर्व क्यों है ?अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :-सुभाष बाबू के नेतृत्व में कलकत्ता में लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मानाने की ऐसी तैयारियाँ की थी जैसी आज से पहले कभी नहीं हुई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा में नहीं जायेगा यदि कोई जाता है तो उसे दोषी समझा जाएगा। परन्तु लोगो ने इसकी कोई परवाह नहीं की और अपनी तैयारियों में लागे रहे। पुलिस की लाठियों से कई लोग घायल हुए ,कई लोगों को गिरफ्तार किया गया। स्त्रियों पर भी बहुत अत्याचार हुए ,इतिहास में कभी इतनी स्त्रियों को एक साथ गिरफ्तार नहीं किया गया था। इन्हीं बातों के कारण इस दिन को अपूर्व बताया गया।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए -:

(1) आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। वह आज बहुत अंश में धूल गया।

उत्तर कलकत्ते के लगभग सभी भागों में झंडे लगाए गए थे। जिस भी रास्तों पर मनुष्यों का :- जाना था - आना, वहीं जोश ,ख़ुशी और नया पन महसूस होता था।बड़े बड़े पार्कों और मैदानों -

को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वही पर सभाएँ और समारोह होना था। स्मारक के निचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बाबजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी।। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक अमुक धारा-के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं।लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। आदमियों के सर फट गए। पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी।इतना सब कुछ होने पर भी लोगो के सहस और जोश में कमी नहीं आई।

(2) खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज :- तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते हैं की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकल दिया था कि अमुक अमुक - धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते हैं। जो लोग भी काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सुचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा में भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद् की ओर से नोटिस निकल गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी|

पद्य-पाठ-३-बिहारी के दोहे

कवि -बिहारी

जन्म -1595 (ग्वालियर (

मृत्यु – 1663

दोहे पाठ सार

प्रस्तुत दोहे कविवर बिहारी द्वारा रचित ग्रन्थ 'बिहारी सतसई 'से लिए गए हैं। इसमें कवि ने भक्ति ,नीति व् श्रृंगार भाव का सुन्दर मेल प्रस्तुत किया है। पहले दोहे में कवि कहते हैं कि श्री कृष्ण के नीलमणि रूपी साँवले शरीर पर पीले वस्त्र रूपी धूप अत्यधिक शोभित हो रही है। दूसरे दोहे में कवि भयंकर गर्मी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गर्मी के कारण जंगल तपोवन बन गया है जहाँ सभी जानवर आपसी द्वेष भुलाकर एक साथ बैठे हैं। तीसरे दोहे में कवि गोपियों की श्री कृष्ण के साथ बात करने की उत्सुकता को प्रकट करते हैं और कहते हैं कि गोपियों ने श्री कृष्ण की बाँसुरी को चुरा लिया है। चौथे दोहे में कवि नायक और नायिका द्वारा भीड़ में भी किस तरह आँखों ही आँखों में बात की जाती है इस बात का वर्णन करते हैं। पांचवें दोहे में कवि जून के महीने की भीषण गर्मी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गर्मी इतनी अधिक बढ़ गई है कि छाया भी छाया ढूंढने के लिए घने जंगलों व घरों में छिप गई है। छठे दोहे में कवि कहते हैं कि नायिका नायक को सन्देश भेजना चाहती है परन्तु अपनी विरह दशा का वर्णन कागज़ पर

1) सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम ,सलौनैं गात।
 मनौ नीलमनि -सैल पर आतपु परयौ प्रभात।।

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई ' से लिया गया है। इसमें कवि ने श्री कृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या (: इस दोहे में कवि ने श्री कृष्ण के साँवले शरीर की सुंदरता का बखान किया है। कवि कहते हैं कि श्री कृष्ण के साँवले शरीर पर पीले वस्त्र बहुत अच्छे लग रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे नीलमणि पर्वत पर प्रातः काल की धूप पड़ रही हो। यहाँ पर श्री कृष्ण के साँवले शरीर को नीलमणि पर्वत तथा पीले वस्त्र ,सूर्य की धूप को कहा गया है|

2) कहलाने एकत बसत अहि मयूर ,मृग बाघ।
 जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ -दाघ निदाघ।।

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श 'से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई ' से लिया गया है। इसमें कवि ग्रीष्म ऋतु का वर्णन कर रहा है।
व्याख्या -: इस दोहे में कवि कहते हैं कि भीषण गर्मी से बेहाल जानवर एक ही स्थान पर बैठे हैं। मोर और साँप एक साथ बैठे हैं,हिरण और शेर एक साथ बैठे हैं। कवि कहते हैं कि गर्मी के कारण जंगल तपोवन की तरह हो गया है जैसे तपोवन में सारे लोग आपसी द्वेष भुला कर एक साथ रहते हैं उसी तरह गर्मी से बेहाल ये जानवर भी आपसी द्वेष को भुला कर एक साथ बैठे हैं

3) बतरस -लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हँसै ,दैन कहैं नटि जाइ।।

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श 'से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई ' से लिया गया है इसमें कवि कहते हैं कि गोपियों ने श्री कृष्ण से बात करने के लिए उनकी मुरली चुरा ली है।
व्याख्या -: इसमें कवि गोपियों द्वारा श्री कृष्ण की बाँसुरी चुराए जाने का वर्णन करते हैं। कवि कहते हैं कि गोपियों ने श्री कृष्ण से बात करने के लालच में उनकी बाँसुरी को चुरा लिया है। गोपियाँ कसम भी खाती हैं कि उन्होंने बाँसुरी नहीं चुराई है लेकिन बाद में भोंहे घुमाकर हंसने लगती हैं और बाँसुरी देने से मना कर रही हैं|

4)कहत ,नटत ,रीझत ,खीझत ,मिलत ,खिलत ,लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सब बात।।

प्रसंग-: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श 'से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई 'से लिया गया है। इसमें कवि ने नायक - नायिका की आँखों - आँखों में चलने वाली बातचीत का सुन्दर वर्णन किया है।
व्याख्या (: इस दोहे में कवि कहते हैं कि नायक और नायिका एक दूसरे से आँखों ही आँखों में बातचीत करते हैं। नायक की बातों का उत्तर कभी नायिका इंकार से देती है,कभी उसकी बातों पर मोहित हो जाती है ,कभी बनावटी गुस्सा दिखाती है और जब उनकी आँखे फिर से मिलती हैं तो वे दोनों खुश हो जाते हैं और कभी - कभी शर्मा भी जाते हैं।कवि कहते हैं कि इस तरह वे भीड़ में भी एक दूसरे से बात करते हैं और किसी को ज्ञात भी नहीं होता।

5)बैठि रही अति सघन बन ,पैठि सदन - तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह।

प्रसंग -: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई 'से लिया गया है। इसमें कवि जून महीने की गर्मी का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि जून महीने की गर्मी इतनी अधिक हो रही है कि छाया भी छाया ढूँढ रही है अर्थात वह भी गर्मी से बचने के लिए जगह तलाश कर रही है। वह या तो किसी घने जंगल में मिलेगी या किसी घर के अंदर।

6)कागद पर लिखत न बनत ,कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ ,मेरे हिय की बात।।

प्रसंग (: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई ' से लिया गया है। इसमें कवि ने एक नायिका की विरह दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि नायिका अपनी विरह की पीड़ा को कागज़ पर नहीं लिख पा रही है और कह कर सन्देश भेजने में उसे शर्म आ रही है वह नायक से कहती है कि तुम आपने ह्रदय से पूछ लो वह मेरे ह्रदय की बात जनता है अर्थात तुम मेरी विरह दशा से भली भांति परिचित होंगे।

6)कागद पर लिखत न बनत ,कहत सँदेसु लजात।
कहिहै सबु तेरौ हियौ ,मेरे हिय की बात।।

प्रसंग (: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई ' से लिया गया है। इसमें कवि ने एक नायिका की विरह दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि नायिका अपनी विरह की पीड़ा को कागज़ पर नहीं लिख पा रही है और कह कर सन्देश भेजने में उसे शर्म आ रही है वह नायक से कहती है कि तुम आपने ह्रदय से पूछ लो वह मेरे ह्रदय की बात जनता है अर्थात तुम मेरी विरह दशा से भली भांति परिचित होंगे।

7)प्रगट भय द्विजराज -कुल ,सुबस बसे ब्रज आइ।
मेरे हरौ कलेस सब ,केसव केसवराइ।।

प्रसंग-: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से लिया गया है। इसके कवि। वह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई 'से लिया गया है।इसमें कवि श्री कृष्ण से उनके कष्ट दूर करने की प्रार्थना करते हैं|

व्याख्या -: कवि कहते हैं कि हे !श्री कृष्ण आपने चंद्र वंश में जन्म लिया और स्वयं ही ब्रज में आकर बस गए। बिहारी जी के पिता का नाम केशवराय है और श्री कृष्ण का एक नाम केशव है ,इसलिए कवि कहते हैं कि आप मेरे पिता के समान हैं अतः मेरे सरे कष्टों का नाश कर दीजिये|

8) जपमाला ,छापैं ,तिलक सरै न एकौ कामु।
मन -काँचै नाचै बृथा साँचै राँचै रामु।।

प्रसंग-: प्रस्तुत दोहा हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श' से लिया गया है। इसके कवि बिहारी हैं। यह दोहा उनकी रचना 'बिहारी सतसई 'से लिया गया है। इसमें कवि बहरी ने ढोंग के स्थान पर सच्चे मन से ईश्वर भक्ति को महत्त्व दिया है।

व्याख्या -:कवि कहते हैं कि केवल ईश्वर के नाम की माला जपने से ,ईश्वर नाम लिख लेने से तथा तिलक करने से ईश्वर भक्ति का कार्य पूरा नहीं होता। यदि मन में ईश्वर के लिए विश्वास न हो तो उसकी भक्ति में नाचना भी व्यर्थ है। इसके विपरीत जो सच्चे मन से ईश्वर भक्ति करते हैं, ईश्वर उन्ही पर प्रसन्न होते हैं।

*बहुवैकल्पिक-प्रश्नोतत्र-

Q1- बिहारी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

A) १५९५ में गवालियर में
B) १५६५ में जयपुर में
C) १५७५ में भरतपुर में
D) १५९५ में

Q2- बिहारी ने काव्य शिक्षा कहाँ से पायी ?

A) आचार्य केशवदास से
B) आचार्य माणेकशाह से
C) आचार्य अत्रे से
D) आचार्य दास से

Q3- बिहारी स्वभाव से कैसे थे ?

A) विनोदी और व्यंग्यप्रिय
B) कठोर हृदय
C) रास रचैया
D) व्यंग्यप्रिय

Q4- बिहारी की रचना का क्या नाम है ?

A) बिहारी सतसई
B) बिहारी नवनायी

C) बिहारी चटजई

D) बिहारीसई

Q5- बिहारी की कितनी रचनाएँ उपलब्ध हैं ?

A) दो

B) चार

C) एक

D) सात

Q6- सतसई में कितने दोहे संग्रहित हैं ?

A) ६००

B) ८००

C) 713

D) 713

Q7- बिहारी की कविताएं किस रस से भरपूर हैं ?

A) श्रृंगार रस

B) प्रेम रस

C) भक्ति रस

D) सभी

Q8- बिहारी की भाषा कौन सी है ?

A) मानक ब्रज भाषा

B) पूर्वांचली

C) बिहारी

D) मानक ब्भाषा

Q9- सतसई मे मुख्यत: किस तरह के दोहे हैं ?

A) प्रेम और भक्ति रस के

B) रास लीला के

C) क्रोध् भरे

D) प्रेम रस के

Q10- बिहारी मुख्य रूप से किस तरह के दोहो के लिये जाने जाते हैं ?

A) छंद

B) शृङ्गार परक

C) अनुप्रास

D) कोई नहीं

(क (निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1.छाया भी कब छाया ढ़ने लगती है?

उत्तर--जेठ मास की दोपहर की प्रचंड गरमी में तो छाया भी छाया की इच्छा करने लगती है अर्थात् छाया रूपी नायिका भी जेठ मास की प्रचंड गरमी में घर से बाहर नहीं निकलना चाहती, क्योंकि भीषण गरमी प्राणियों के साथ-साथ प्रकृति को भी दग्ध कर देती है, तो लगता है कि छाया भी कहीं छिपकर बैठ गई है।

प्रश्न 2.बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात–'स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--बिहारी की नायिका विरह की अग्नि में जल रही है। वह अपने मन की बात नायक को बताने में असमर्थ है। वह कागज पर अपने प्रियतम को संदेश लिखना चाहती है, परंतु आँसू, पसीने व कंपन के कारण निष्फल हो जाती है। किसी अन्य के माध्यम से नायक को संदेश भेजने में उसे लज्जा आती है। नायिका को विश्वास है कि प्रेम दोनों ओर से है। जैसा प्रेम उसके मन में है, वैसा ही प्रेम प्रेमी के हृदय में भी है, प्रेम हृदय की भाषा स्वयं जान लेता है, अतः इसमें कुछ कहने सुनने की ज़रूरत नहीं रह जाती|

प्रश्न 3.सच्चे मन में राम बसते हैं-दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-सच्चे मन में ही ईश्वर का वास होता है अर्थात् सच्चे मन में ही राम बसते हैं, क्योंकि सच ही तो ईश्वर है। कच्चा मन अर्थात् विषयी मन तो भोग-विलास, विषय-वासनाओं में उलझा रहता है। जिनका मन साफ नहीं होता, वे भौतिक सुखों की चकाचौंध में ही फंसे रहते हैं। माला जपना आडंबर है, दिखावा है। इनसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। सच्चे। मन, सच्ची श्रद्धा -तथा सच्ची लगन से ही 'राम' की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 4.गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं?

उत्तर-गोपियाँ रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण से बातें करने के लालच में उनकी निकटता अधिक समय

तक पाने की इच्छा रखने के कारण श्रीकृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण सदा मुरली बजाने में मस्त रहते हैं जिसके कारण गोपियाँ उनसे बातें नहीं कर पाती हैं। वे उनकी मुरली छिपाने का उपाय सोचती हैं क्योंकि जब मुरली उनके पास नहीं रहेगी तो वे उनसे मुरली के बहाने बातें करेंगी। इस उद्देश्य से वे जान-बूझकर कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं।

प्रश्न 5.बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-कवि बिहारी जी ने सभी की उपस्थिति में भी बिना शब्दों के कैसे बात की जा सकती है, इस रहस्य के उद्घाटन का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। लोगों की उपस्थिति में तथा भरे हुए भवन में भी प्रेमी-प्रेमिका आँखों-ही-आँखों में एक-दूसरे की भाषा समझ लेते हैं। आँखों की सांकेतिक भाषा से दोनों एक-दूसरे के हृदय की बात जान लेते हैं। और किसी को इसकी खबर भी नहीं लगती।

*-लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र कैसा लग रहा है?
उत्तर-श्रीकृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र अत्यधिक सुशोभित हो रहा है। इस पीले वस्त्र के कारण उनका सौंदर्य बढ़ गया है। साँवले शरीर पर पीला वस्त्र ऐसे लग रहा है जैसे नीलमणि पर्वत पर प्रभातकालीन सूर्य की पीली-पीली धूप पड़ रही हो।

प्रश्न 2.भयंकर गरमी का जीव-जंतुओं के स्वभाव पर क्या असर हुआ है?
उत्तर-भयंकर गरमी ने जीव-जंतुओं को इतना परेशान कर दिया है कि वे अपना स्वाभाविक वैर भी भूल बैठे हैं। प्रायः साँप और मोर को साथ नहीं देखा जाता है, क्योंकि उनमें स्वाभाविक वैर है। यही हाल बाघ और हिरन का भी है। गरमी के कारण ये एक साथ बैठे नज़र आ रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे सारा संसार तपोवन बन गया है जहाँ उनका स्वाभाविक वैर समाप्त हो गया है।

प्रश्न 3.गोपियाँ बातों का आनंद लेने के लिए क्या करती हैं?
उत्तर-गोपियाँ श्री कृष्ण का सामीप्य और उनकी बातों से आनंदित होना चाहती हैं। इसके लिए कोई गोपी कृष्ण की मुरली चुरा लेती है। कृष्ण जब उससे मुरली वापस मागते हैं तो वह सौगंध खाकर मुरली चुराने से मना करती है, परंतु भौंहों से हँस देती है। इसका तात्पर्य है कि मुरली

उसी के पास है। अब कृष्ण उससे पुनः मुरली माँगते हैं तो वह देने से मना करती है। ताकि वह कृष्ण की बातों से आनंदित होती रहे।

प्रश्न 4.कवि बिहारी ने छाया के प्रति अनूठी कल्यना की है। स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-कवि बिहारी ने जेठ माह की प्रचंड गरमी के बीच छाया को देखकर अनूठी और सर्वथा नवीन कल्पना की है कि छाया भी गरमी से बेहाल होकर जंगल में चली गई है और वह भी घर में या पेड़ों के नीचे बैठना चाहती है अर्थात् छाया भी छाया चाहने लगी है।

प्रश्न 5.बिहारी के दोहे के आधार पर नायिका नायक को संदेश भिजवाने में असमर्थ क्यों रहती है?
उत्तर-कवि बिहारी के दोहे की नायिका विरह व्यथा से पीड़ित है। इसके कारण वह इतनी दुर्बल हो गई है कि उसके हाथ और पैर हिलने लगे हैं, शरीर पसीना-पसीना हो रहा है, ऐसे में वह स्वयं नायक को पत्र लिखकर अपनी विरह व्यथा और प्रेमातुरता से अवगत नहीं करा पा रही है। वह अपने मन की बात संदेशवाहक से लोक-लाज और नारी सुलभ लज्जा के कारण नहीं कह पाती है। इस तरह वह नायक को संदेश भिजवाने में असमर्थ रहती है।

प्रश्न 6.बिहारी भगवान से क्या प्रार्थना करते हैं ?
उत्तर-कवि बिहारी भगवान श्रीकृष्ण से अपना दुख दूर करने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे श्रीकृष्ण! आप चंद्रवंश में उत्पन्न हुए हो और अपनी इच्छा से ब्रज आकर बस गए हो। हे केशव! अब आप मेरे सारे कष्ट हर लीजिए।

*-दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.बिहारी गागर में सागर भरने की कला में सिद्धहस्त हैं। कहत नटत...’ दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-कवि बिहारी कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक बातें कहने में कुशल हैं। वे अपने दोहों में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो एक ही शब्द में पूरे वाक्य का अर्थ अभिव्यंजित कर देते हैं। कहत नटत रीझत... को एक-एक शब्द पूरे वाक्य का अर्थ व्यक्त करने में समर्थ है। इस दोहे में नायक-नायिका प्रणय-निवेदन संबंधी बातें जिस तरह संकेतों-ही-संकेतों में कर लेते हैं उसकी अभिव्यक्ति एक दोहे के रूप में बिहारी जैसा कवि ही कर सकता है, अन्य कवि नहीं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिहारी गागर में सागर भरने की कला में सिद्धहस्त हैं।

प्रश्न 2.कवि बिहारी भी कबीर की भाँति आडंबरपूर्ण भक्ति से दूर रहना चाहते थे। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि बिहारी का मानना था कि दिखावा एवं आडंबर करने को भक्ति नहीं कहा जा सकता है। कुछ लोग हाथ में माला लेकर राम-राम रटने को भक्ति मानते हैं तो कुछ लोग रामनामी वस्त्र ओढ़कर प्रभुभक्ति कहलाने का प्रयास करते हैं।इतना ही नहीं कुछ लोग माथे पर रामनामी तिलक लगाकर प्रभु को पाने का प्रयास करते हैं। कवि बिहारी कहते थे कि ऐसा तो वही करते हैं जिनका मन कच्चा होता है या जो अपने मन को प्रभु राम के चरणों में नहीं लगा पाते हैं। प्रभु राम को पाने के लिए किसी आडंबर की आवश्यकता नहीं। वे तो सच्ची भक्ति से ही प्रसन्न हो जाते हैं। इसी तरह के विचार कबीर के थे। इस तरह स्पष्ट है कि बिहारी भी कबीर की भाँति आडंबरपूर्ण भक्ति से दूर ही रहना चाहते थे।

पाठ 12 तताँरा वामीरो कथा

लेखक -लीलाधर मंडलोई

जन्म -1954 (छिंदवाड़ा –गुढ़ी)

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ 'तताँरा वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चूका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लिए एक जोड़े को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के बलिदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में किया है।

बहुत समय पहले ,जब लिटिल अंदमान और कार -निकोबार एक साथ जुड़े हुए थे ,तब वहाँ एक बहुत सुंदर गाँव हुआ करता था। उसी गाँव के पास में ही एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। जिसका नाम तताँरा था। निकोबार के सभी व्यक्ति उससे बहुत प्यार करते थे। इसका एक कारण था कि तताँरा एक भला और सबकी मदद करने वाला व्यक्ति था।जब भी कोई मुसीबत में होता तो हर कोई उसी को याद करता था और वह भी भागा -भागा वहाँ उनकी मदद करने के लिए पहुँच जाता था। तताँरा हमेशा अपनी पारम्परिक पोशाक ही पहनता था और हमेशा अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार को बाँधे रखता था। लोगों का मानना था कि उस तलवार में लकड़ी की होने के बावजूद भी अनोखी दैवीय शक्तियाँ हैं। तताँरा कभी भी अपनी तलवार को अपने से अलग नहीं करता था। वह दूसरों के सामने तलवार का प्रयोग भी नहीं करता था। तताँरा की तलवार जिज्ञासा पैदा करने वाला एक ऐसा राज था जिसको कोई नहीं जानता था।

एक शाम को तताँरा दिन भर की कठोर मेहनत करने के बाद समुद्र के किनारे घूमने के लिए चल पड़ा।समुद्र से ठंडी ठंडी हवाएँ आ रही थी। शाम के समय पक्षियों की जो चहचहाहटें होती हैं वे भी धीरे -धीरे शांत हो रही थी। अपने ही विचारों में खोया हुआ तताँरा समुद्री बालू पर बैठ कर सूरज की आखरी किरणों को समुद्र के पानी पर देख रहा था जो बहुत रंग -बिरंगी लग रही थी। तभी कहीं से उसे मधुर संगीत सुनाई दिया जो उसी के आस पास कोई गा रहा था।तताँरा बैचेन मन से उस दिशा की ओर बढ़ता गया। आखिरकार तताँरा की नज़र एक युवती पर पड़ी उस युवती को यह पता नहीं था कि कोई युवक उसे बिना कुछ बोले बस देखता जा रहा है। उसी समय अचानक एक ऊँची लहर उठी और उसको भिगो कर चली गई। इस तरह अचानक भीगने से वह युवती हड़बड़ा गई और अपना गाना भूल गई। तताँरा ने बहुत ही विनम्र तरीके से उस युवती से पूछा 'तुमने अचानक इतना सुरीला और अच्छा गाना अधूरा ही क्यों छोड़ दिया ?'

अपने सामने एक सुंदर युवक को देख कर वह युवती आश्चर्यचकित हो गई।उसने नकली नाराजगी दिखाते हुए उत्तर दिया।
"पहले ये बताओ कि तुम कौन हो,मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो और इस तरह के अनुचित या बेकार के प्रश्न पूछने का क्या कारण है ?"
तताँरा बार- बार अपना प्रश्न दोहराता रहा। तताँरा के बार - बार एक ही प्रश्न को दोहराने के कारण युवती चिढ़ गई। युवती ने कहा -आखिर मैं गीत क्यों गाऊं अर्थात मैं तुम्हारी बात क्यों मानूं ?क्या उसे गाँव का नियम नहीं मालूम कि एक गाँव का व्यक्ति दूसरे गाँव के व्यक्ति से बात नहीं कर सकता ? इतना कह कर वह युवती जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी। उसके मुड़ते ही मानो तताँरा को कुछ होश आया। अब उसे अपनी गलती का एहसास हो रहा था। तताँरा उस युवती के सामने चला गया और उसका रास्ता रोक कर लाचारी के साथ प्रार्थना करने लगा कि तुम बस अपना नाम बता दो मैं तुम्हें जाने दूंगा। तताँरा द्वारा नाम पूछे जाने पर युवती ने जवाब दिया " वामीरो " यह नाम सुनना तताँरा को ऐसा लगा जैसे उसके कानों में किसी ने रस घोल दिया हो। तताँरा ने वामीरो से कहा कि कल वह वही चट्टान पर उसकी प्रतीक्षा करेगा । वह वामीरो को जरूर आने के लिए कहता है।
वामीरो ने तताँरा के बारे में बहुत सी कहानियाँ सुनी थी। उसकी सोच में तताँरा एक बहुत ही शक्तिशाली युवक था। परन्तु वही तताँरा जब वामीरो के सामने आया तो बिलकुल अलग ही रूप में था। वह सुंदर और शक्तिशाली तो था ही साथ ही साथ वह बहुत शांत ,समझदार और सीधा साधा था। वह बिलकुल वैसा ही था जैसा वामीरो अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी। परन्तु दूसरे गाँव के युवक के साथ उसका सम्बन्ध रीति रिवाजों के विरुद्ध था। इसलिए वामीरो ने तताँरा को भूल जाना ही समझदारी समझा। परन्तु यह आसान नहीं लग रहा था क्योकि तताँरा बार -बार उसकी आँखों के सामने आ रहा था जैसे वह बिना पलकों को झपकाए उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।
तताँरा दिन ढलने से बहुत पहले ही लपाती गाँव की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया था जहाँ उसने वामीरो को आने के लिए कहा था। वामीरो के इन्तजार में उसे हर एक पल बहुत अधिक लम्बा लग रहा था। उसके अंदर एक शक भी पैदा हो गया था कि अगर वामीरो आई ही नहीं तो।उसके पास प्रतीक्षा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। वामीरो तताँरा से मिलने आए गई।
तताँरा और वामीरो अब हर रोज उसी जगह मिलने लगे। लपाती के कुछ युवकों को इस प्रेम के बारे में पता चल गया और ये खबर हवा की तरह हर जगह फैल गई। वामीरो लपाती गाँव की रहने वाली थी और तताँरा पासा गाँव का। दोनों का सम्बन्ध किसी भी तरह संभव नहीं था। क्योंकि रीतिरिवाज़ के अनुसार दोनों के सम्बन्ध के लिए दोनों का एक ही गाँव का होना जरुरी था। कुछ समय के बाद पासा गाँव में 'पशु पर्व 'का आयोजन किया गया। पशु पर्व में हटे -कटे पशुओं के दिखावे के अलावा पशुओं से युवकों की शक्ति परखने की प्रतियोगितायें भी होती थी। तताँरा का मन इन में से किसी भी कार्यक्रम में नहीं लग रहा था। उसकी परेशान आँखे तो वामीरों को ढूंढने में व्यस्त थी।जब तताँरा ने वामीरो को देखा तो उसकी आँखें नमी

से भरी थी और उसके होंठ डर कर काँप रहे थे। तताँरा को देखते ही वामीरो फुट -फुटकर रोने लगी। ततॉंरा इस तरह वामीरो को रोता देखकर भावुक हो गया। वामीरो के रोने की आवाज सुनकर वामीरो की माँ वहाँ आ गई और दोनों को एक साथ देख कर गुस्सा हो गई। उसने ततॉंरा को कई तरह से अपमानित करना शुरू कर दिया। गाँव वाले भी ततॉंरा के विरोध में बोलने लगे। लोगो की बातों को सुनना अब ततॉंरा के लिए सहन कर पाना मुश्किल हो रहा था।अचानक उसका हाथ उसकी तलवार पर आकर टिक गया। गुस्से से उसने तलवार निकली। उसने अपने गुस्से को शांत करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से तलवार को धरती में गाड़ दिया और अपनी पूरी ताकत से उसे खींचने लगा ।जो लकीर ततॉंरा ने खींची थी उस लकीर की सीध में धरती फटती जा रही थी।ततॉंरा द्वीप के एक ओर था और वामीरो दूसरी ओर। ततॉंरा को जैसे ही होश आया ,उसने देखा कि द्वीप के जिस ओर वह है वो टुकड़ा समुद्र में धँसने लगा है। अब वह तड़पने लगा, वह छलांग लगा कर दूसरी ओर जाना चाहता था परन्तु उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह निचे की ओर फिसलने लगा।वह उस कटे हुए द्वीप के उस आखरी भू -भाग पर बेहोश पड़ा हुआ था जो संयोगवश उस द्वीप से जुड़ा हुआ था। बहता हुआ ततॉंरा कहा गया ,उसके बाद उसका क्या हुआ ये कोई नहीं जान सका। इधर वामीरो ततॉंरा से अलग होने के कारण पागल हो गई। वह हर समय बस ततॉंरा को ही खोजती रहती और उसी जगह आकर घंटों बैठी रहती जहाँ वो ततॉंरा से मिलने आया करती थी। उसने खाना -पीना छोड़ दिया था। परिवार से वह कही अलग हो गई। लोगो ने उसे ढूंढने की बहुत कोशिश की परन्तु अब वामीरो का भी कोई सुराग नहीं मिला कि वह कहा गई।

आज ना तो ततॉंरा है और ना ही वामीरो है,परन्तु फिर भी आज उनकी प्रेमकथा हर घर में सुनाई जाती है। निकोबार के निवासियों का मानना है कि ततॉंरा की तलवार से कार -निकोबार के जो दो टुकड़े हुए, उसमे से दूसरा टुकड़ा आज लिटिल अंदमान के नाम से प्रसिद्ध है जो कार -निकोबार से 96 कि.मी. दूर स्थित है।निकोबार निवासीयों ने इस घटना के बाद अपनी परम्परा को बदला और दूसरे गाँव में भी विवाह सम्बन्ध बनने लगे। ततॉंरा - वामीरो की जो एक -दूसरे के लिए त्यागमयी मृत्यु थी वह शायद इसी सुखद बदलाव के लिए थी।

*-बहुवैकल्पिक-प्रश्नोत्तर-

Q1- ततॉंरा वामीरो कथा के लेखक कौन हैं ?

A) श्री लीलाधर मंडलोई

B) श्री प्रेम चंद

C) प्रह्लाद अग्रवाल

D) कोई नहीं

Q2- श्री लीलाधर का जन्म कब हुआ ?

A) १९५४ में

B) १९४५ में

C) १९६४ में

D) कोई नहीं

Q3- इनका जन्म कहाँ हुआ ?

A) छिंदवाड़ा के गांव गुड़ी में

B) भोपाल में

C) रायपुर में

D) कोई नहीं

Q4- मंडलोई जी ने कौन सी शैली प्रयोग की है ?

A) व्यवहारात्मक

B) उपमायुक्त

C) वर्णात्मक और संवेदात्मक

D) कोई नहीं

Q5- किस के प्रयोग से मंडलोई जी की भाषा प्रभावशाली हो गई है ?

A) लोक कथा से

B) गीतों से

C) मुहावरों के प्रयोग से

D) कोई नहीं

Q6- लीलाधर मंडलोई किस प्रकार का लेखन लिखते हैं?

A) लेख

B) कहानी

C) कविता

D) गीत

Q7- इनके द्वारा अंडमान निकोबार द्वीप समूह पर लिखा गद्य किसका अध्यन है ?

A) समाज शास्त्र का

B) अर्थ शास्त्र का

C) राजनीती का

D) भूगोल का

Q8- मंडलोई जी की कवितायें किस से संबन्धित हैं ?

A) छतीसगढ़ अंचल से

B) मध्यप्रदेश भोपाल से

C) रायपुर से

D) उत्तराखंड से

Q9- मंडलोई जी की प्रमुख रचनाओं के नाम बताएं |

A) घर घर घूमा

B) रात बिरात

C) देखा अनदेखा और कला पानी

D) सभी

Q10- तताँरा वामीरो कथा किस पर आधारित है ?

A) अंडमान निकोबार द्वीप समूह की लोक कथा पर

B) मुहावरों पर

c) लोक गीतों पर

D) किसी पर नहीं

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

उत्तर-तताँरा-वामीरो की कथा निकोबार द्वीप समूह के प्रमुख दूद्वीप 'कार-निकोबार' की है।

प्रश्न 2.वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?

उत्तर-वामीरो मंत्रमुग्ध होकर गाना गा रही थी कि एकाएक समुद्र की एक ऊँची लहर ने उसे भिगो दिया था। वह हड़बड़ाकर उठ । बैठी। ऐसी स्थिति में उसने गाना बंद कर दिया था।

प्रश्न 3.तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?

उत्तर-तताँरा ने वामीरो से अगले दिन उसी स्थान पर उससे मिलने की याचना की। इससे पूर्व उसने एक और याचना की कि वह अपना अधूरा गाना पूरा करे।

प्रश्न 4.तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या रीति थी?

उत्तर-तताँरा और वामीरो के गाँव की रीति थी कि वहाँ के निवासी केवल अपने गाँववालों के साथ ही विवाह कर सकते थे। गाँव के बाहर के किसी लड़के या लड़की से विवाह करना अनुचित माना जाता था।

प्रश्न 5.क्रोध में तताँरा ने क्या किया?

उत्तर-गाँववालों और वामीरो की माँ द्वारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना न रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकालकर उसे पूरी शक्ति से धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से खींचने लगा, जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?

उत्तर-तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का यह मत था कि लकड़ी की होने के बावजूद उस तलवार में

अद्भुत दैवीय शक्ति थी। वह अपनी तलवार को अपने से कभी भी अलग न होने देता था और दूसरों के सामने उसका उपयोग नहीं करता था।

प्रश्न 2.वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया?

उत्तर-वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से जवाब दिया कि वह उसके कहने पर गाना क्यों गाए? वह पहले उसे बताए कि वह कौन है? वह उससे असंगत प्रश्न क्यों कर रहा है? वह उसे घूर क्यों रहा है? वह अपने गाँव के पुरुष के अलावा किसी अन्य को जवाब देने को विवश नहीं है।

प्रश्न 3.तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर-तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में यह परिवर्तन आया कि वहाँ लोग अब दूसरे गाँवों से भी वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे। दोनों की त्यागमयी मृत्यु ने लोगों की विचारधारा में एक सुखद तथा अद्भुत परिवर्तन ला दिया तथा उनकी रूढ़िवादी परंपराएँ भी परिवर्तित हो गईं।

प्रश्न 4.निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?

उत्तर-निकोबार के लोग तताँरा को उसके साहसी और परोपकारी स्वभाव के कारण पसंद करते थे। वह सदैव दूसरों की सहायता करने में विश्वास रखता था और समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता था।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1.निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है?

उत्तर-निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने में तताँरा और वामीरो की प्रेम-कथा की त्यागमयी मृत्यु है, जो एक सुखद परिवर्तन के लिए थी।

प्रश्न 2.तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद समुद्र के किनारे टहलने गया था। संध्या का समय था। उस समय क्षितिज पर सूरज डूबने को था। ठंडी हवाएँ चल रही थीं। पक्षियों की चहचहाहट से वातावरण गूंज रहा था। सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणें, पानी में घुलकर अद्भुत स्वर्गिक सौंदर्य की रचना कर रही थीं।

प्रश्न 3.वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर-वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। वह वामीरो से मिलकर सम्मोहित-सा हो गया।

उसके शांत जीवन में हलचल मच गई। वह स्वयं को रोमांचित अनुभव कर रहा था। वह वामीरो की प्रतीक्षा में दिन बिताने लगा। प्रतीक्षा का एक-एक पल उसे पहाड़ की तरह भारी प्रतीत होता था। वह

हमेशा अनिर्णय की स्थिति में रहता था कि दामीरो उससे मिलने आएगी या नहीं अर्थात् उसके मन में आशंका-सी बनी रहती थी।

प्रश्न 4.प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?

उत्तर-प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए अनेक प्रकार के आयोजन किए जाते थे। पशु-पर्व, कुश्ती, दंगल तथा मेलों का आयोजन किया जाता था। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं का प्रदर्शन होता था। युवकों की शक्ति-परीक्षा के लिए उन्हें पशुओं से भिड़ाया जाता था। इसमें सभी लोग हिस्सा लेते थे। पासा गाँव में वर्ष में एक ऐसा मेला होता था जिसमें सभी गाँवों के लोग इकट्ठे होते थे। उसमें नृत्य-संगीत और भोजन का भी प्रबंध होता था।

प्रश्न 5.रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-रूढ़ियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें, तब वास्तव में उनका टूट जाना ही उचित है तथा इनमें परिवर्तन करना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि रूढ़ियाँ व्यक्ति को बंधनों में जकड़ लेती हैं, जिससे व्यक्ति का विकास होना बंद हो जाता है। इनके टूट जाने से व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर छाया बोझ हट जाता है। व्यक्ति की उन्नति तथा स्वतंत्रता हेतु इन रूढ़ियों को तोड़ देना चाहिए, नहीं तो ये हमारी उन्नति में बाधक बनकर खड़ी रहेंगी।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसने शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।

उत्तर-इसका आशय है कि गाँववालों और वामीरो की माँ दुवारा अपमानित होने के बाद तताँरा के क्रोध का ठिकाना न रहा। क्रोध में ही उसने अपनी तलवार निकालकर उसे पूरी शक्ति से धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से खींचने लगा, जिससे धरती में सीधी दरार आ गई और धरती दो टुकड़ों में बँट गई।

प्रश्न 2.बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।

उत्तर-तताँरा वामीरो को पहली ही नज़र में बेहद प्रेम करने लगा था। वह उसकी प्रतीक्षा में अपने जीवन की संपूर्ण आस लगाए बैठा था। उसने उसे पुनः साँझ को समुद्री चट्टान पर आने के लिए कहा था। अतः वह छटपटाते हुए अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसके मन में एक आशंका यह भी थी कि कहीं वामीरो न आए। इस आशंका से उसका मन काँप उठता था, परंतु साथ ही एक आशा की किरण भी थी।

पद्य-पाठ-४- मनुष्यता

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

जन्म - 1886(चिरगाँव)

मृत्यु – 1964

मनुष्यता पाठ सार

मनुष्यता पाठ सार

इस कविता में कवि मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। पहले भाग में कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। दूसरे भाग में कवि कहता है कि हमें उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे। तीसरे भाग में कवि कहता है कि पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हे उनकी त्याग भाव के लिए आज भी याद किया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले। चौथे भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है। पांचवें भाग में कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं। हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।छठे भाग में कवि कहना चाहता है कि हमें दयालु बनना चाहिए क्योंकि दयालु और परोपकारी मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं। अतः हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए।सातवें भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक है ,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये।अंतिम भाग में कवि कहना चाहता है कि विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है|

इस कविता में कवि मनुष्यता का सही अर्थ समझाने का प्रयास कर रहा है। पहले भाग में कवि कहता है कि मृत्यु से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु तो निश्चित है पर हमें ऐसा कुछ करना चाहिए कि लोग हमें मृत्यु के बाद भी याद रखें। असली मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीना व मरना सीख ले। दूसरे भाग में कवि कहता है कि हमें उदार बनना चाहिए क्योंकि उदार मनुष्यों का हर जगह गुण गान होता है। मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों की चिंता करे। तीसरे भाग में कवि कहता है कि पुराणों में उन लोगों के बहुत उदाहरण हैं जिन्हे उनकी त्याग भाव के लिए आज भी याद किया जाता है। सच्चा मनुष्य वही है जो त्याग भाव जान ले। चौथे भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया और करुणा का भाव होना चाहिए, मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए मरता और जीता है। पांचवें भाग में कवि कहना चाहता है कि यहाँ कोई अनाथ नहीं है क्योंकि हम सब उस एक ईश्वर की संतान हैं।

हमें भेदभाव से ऊपर उठ कर सोचना चाहिए।छठे भाग में कवि हमें दूसरों का परोपकार व कल्याण करना चाहिए।सातवें भाग में कवि कहता है कि मनुष्यों के बाहरी कर्म अलग अलग हो परन्तु हमारे वेद साक्षी है की सभी की आत्मा एक है ,हम सब एक ही ईश्वर की संतान है अतः सभी मनुष्य भाई -बंधु हैं और मनुष्य वही है जो दुःख में दूसरे मनुष्यों के काम आये।अंतिम भाग में कवि कहना चाहता है कि विपत्ति और विघ्न को हटाते हुए मनुष्य को अपने चुने हुए रास्तों पर चलना चाहिए ,आपसी समझ को बनाये रखना चाहिए और भेदभाव को नहीं बढ़ाना चाहिए ऐसी सोच वाला मनुष्य ही अपना और दूसरों का कल्याण और उद्धार कर सकता है|

*मनुष्यता की पाठ व्याख्या-

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु- प्रवृति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि बताना चाहता है कि मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या -: कवि कहता है कि हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि कहता है कि हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है । मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि बताना चाहता है कि जो मनुष्य दूसरों के लिए जीते हैं उनका गुणगान युगों - युगों तक किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात पुस्तकों में किया जाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जीवित व्यक्ति की तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। कवि कहता है कि जो व्यक्ति पुरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है|

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तिओं के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी ख़ुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है|

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया ,करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए ,यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य ,मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।

रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि सम्पति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है|

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मवषयों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बड़ो। कवि कहता है कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हे अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करे व परोपकार करे।

'मनुष्य मात्र बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक - दूसरे के भाई - बन्धु हैं।

व्याख्या -: कवि कहता है कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई - बन्धु हैं ।यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पिता है, अर्थात सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है कि सभी की आत्मा एक है। कवि कहता है कि यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है|

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

प्रसंग -: प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तिओं में कवि कहता है कि यदि हम ख़ुशी से,सारे कष्टों को हटते हुए ,भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है की समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या -: कवि कहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे

क)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

प्रश्न 1 -: कवि ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?
उत्तर-: कवि ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चिंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद किया जाता है।

प्रश्न 2 -: उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
उत्तर -: उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चिंता करता है और लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग देता है।

प्रश्न 3 -: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए क्या उदाहरण दिया है**?**
उत्तर -: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी,कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 4 -: कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?
उत्तर -: कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-:
रहो न भूल के कभी मगांध तुच्छ वित्त में,सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।अर्थात सम्पति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए कि आपके पास आपके

अपनों का साथ है क्योंकि इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं।

प्रश्न 5 -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

प्रश्न 6 -: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?

उत्तर -: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है ताकि आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मिट जाएगी और सबका कल्याण और समृद्धि होगी।

प्रश्न 7 -: व्यक्ति को किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर -: मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, कवि के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चिंता करे।

प्रश्न 8 -: ' मनुष्यता ' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है ?

उत्तर -: 'मनुष्यता ' कविता के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद्धि संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ताकि हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।

ख)निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिये-

1)सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?

उत्तर -: कवि इन पंक्तियों में कहना चाहता है कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए, यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं । इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके

सामने नहीं झुकता अर्थात उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है।

2) रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।

उत्तर -: कवि इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है।

3) चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

उत्तर -: कवि इन पंक्तियों में कहना चाहता है कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करे।

Q1- मैथिलि शरण गुप्त का जनम कब और कहाँ हुआ?

A) १८८६ में झाँसी के चिरगांव में

B) १८८७ में झाँसी

C) १८८९ में महोबा में में महोबा में

D) वाराणसी में

Q2- मैथिलि शरण गुप्त का किन भाषाओं पर समान अधिकार था ?

A) संस्कृत

B) बांग्ला

C) मराठी और अंग्रेजी

D) ब्रज और संस्कृत

Q3- कवी ने किन पंक्तियों में गर्व रहित जीवन जीने की सलाह दी है ?

A) सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही

B) रहो न भूल के कभी मगांध तुच्छ वित्त में,

C) सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।

D) मनुष्य मात्र बन्धु है

कोई नहीं

Q4- गुप्त जी की चिरसंचित अभिलाषा क्या थी?

A) भगवान राम का कीर्तिमान

B) श्री कृष्ण का कीर्तिमान

C) अपने पिता का कीर्तिमान

D) अपने माता पिता का कीर्तिमान

Q5- गुप्त जी की कविताओं में कौन सी भाषा का प्रभाव है ?

A) संस्कृत

B) हिंदी

C) गुजराती

D) सभी

Q6- गुप्त जी की काव्य की कथावस्तु पाठक के सामने क्या प्रस्तुत करती है ?

A) भारत के अतीत का स्वर्ण चित्र

B) भारत के भविष्य का स्वर्ण चित्र

C) भारत के वर्तमान का स्वर्ण चित्र

D) सभी

Q7- गुप्त जी की प्रमुख कृतियों के नाम बताये |

A) साकेत

B) यशोधरा

C) जय द्रथ वध

D) सभी

Q8- गुप्त जी के पिता कौन थे ?

A) सेठ रामचरण दास

B) सेठ चरणदास

C) सेठ तरणदास

D) कोई नहीं

Q9- गुप्त जी के छोटे भाई कौन थे ?

A) सियाराम शरण

B) रामनाथ शरण

C) भरतनाथ शरण

D) कोई नहीं

Q10- इस कविता में, कवि किन मनुष्यो को महान मानते हैं?

A) परोपकारी मनुष्यो को

B) अपना भला करने वाले मनुष्यो को

C) अपने रिश्ते नाटो का भला करने वालो को

D) सभी को

क)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये -

प्रश्न 1 -: कवि ने कैसी मृत्यु को समृत्यु कहा है?

उत्तर-: कवि ने ऐसी मृत्यु को समृत्यु कहा है जिसमें मनुष्य अपने से पहले दूसरे की चिंता करता है और परोपकार की राह को चुनता है जिससे उसे मरने के बाद भी याद किया जाता है।

प्रश्न 2 -: उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर -: उदार व्यक्ति परोपकारी होता है, वह अपने से पहले दूसरों की चिंता करता है और लोक कल्याण के लिए अपना जीवन त्याग देता है।

प्रश्न 3 -: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए क्या उदाहरण दिया है?

उत्तर -: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण दे कर 'मनुष्यता ' के लिए यह सन्देश दिया है कि परोपकार करने वाला ही असली मनुष्य कहलाने योग्य होता है। मानवता की रक्षा के लिए दधीचि ने अपने शरीर की सारी अस्थियां दान कर दी थी,कर्ण ने अपनी जान की परवाह किये बिना अपना कवच दे दिया था जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। कवि इन उदाहरणों के द्वारा यह समझाना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है।

प्रश्न 4 -: कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व - रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर -: कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में गर्व रहित जीवन व्यतीत करने की बात कही है-:

रहो न भूल के कभी मगांध तुच्छ वित्त में,

सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अर्थात सम्पति के घमंड में कभी नहीं रहना चाहिए और न ही इस बात पर गर्व करना चाहिए कि आपके पास आपके अपनों का साथ है क्योंकि इस दुनिया में कोई भी अनाथ नहीं है सब उस परम पिता परमेश्वर की संतान हैं।

प्रश्न 5 -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर -: ' मनुष्य मात्र बन्धु है ' अर्थात हम सब मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं अतः हम सब भाई - बन्धु हैं। भाई -बन्धु होने के नाते हमें भाईचारे के साथ रहना चाहिए और एक दूसरे का बुरे समय में साथ देना चाहिए।

प्रश्न 6 -: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है ?
उत्तर -: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है ताकि आपसी समझ न बिगड़े और न ही भेदभाव बड़े। सब एक साथ एक होकर चलेंगे तो सारी बाधाएं मिट जाएगी और सबका कल्याण और समृद्धि होगी।

प्रश्न 7 -: व्यक्ति को किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए ?इस कविता के आधार पर लिखिए।
उत्तर -: मनुष्य को परोपकार का जीवन जीना चाहिए ,अपने से पहले दूसरों के दुखों की चिंता करनी चाहिए। केवल अपने बारे में तो जानवर भी सोचते हैं, कवि के अनुसार मनुष्य वही कहलाता है जो अपने से पहले दूसरों की चिंता करे।

प्रश्न 8 -: ' मनुष्यता ' कविता के द्वारा कवि क्या सन्देश देना चाहता है ?
उत्तर -: 'मनुष्यता ' कविता के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि परोपकार ही सच्ची मनुष्यता है। परोपकार ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम युगों तक लोगो के दिल में अपनी जगह बना सकते है और परोपकार के द्वारा ही समाज का कल्याण व समृद्धि संभव है। अतः हमें परोपकारी बनना चाहिए ताकि हम सही मायने में मनुष्य कहलाये।
-

गद्य-पाठ-१३-तीसरी कसम

खक - प्रहलाद अग्रवाल

जन्म - 1947 (मध्य प्रदेश, जबलपुर)

पाठ सार

एक गीतकार के रूप में फ़िल्मी जगत से जुड़े रहने वाले कवि और गीतकार शैलेंद्र ने जब फणीश्वर नाथ रेणु की अमर कृति 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफाम' को सिनेमा परदे पर उतारा तो ये फिल्म मील का पत्थर सिद्ध हुई अर्थात इस फिल्म की जगह कोई दूसरी फिल्म नहीं ले पाई। 'तीसरी कसम' को आज इसलिए भी याद किया जाता है क्योंकि इस फिल्म को बनाने के बाद यह भी सिद्ध हो गया कि हिंदी फिल्म जगत में एक सार्थक और उदेश्य से भरपूर फिल्म को बनाना कितना कठिन और कितना जोखिम भरा काम है।

'संगम' नाम की फिल्म की आश्चर्यजनक सफलता के बाद फिल्म के नायक राजकपूर में गहरा आत्मविश्वास आ गया जिसके कारण उन्होंने एक साथ चार फिल्मों में काम करने की सार्वजनिक बात कर दी। इन्हीं फिल्मों में सन 1966 में कवि शैलेंद्र के द्वारा बनाई गई फिल्म 'तीसरी कसम' भी शामिल है। कहा जा सकता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

'तीसरी कसम' फिल्म कवि शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फिल्म है। इस फिल्म को बहुत सारे पुरूस्कारों से सम्मानित किया गया। यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। अभिनय को देखते हुए 'तीसरी कसम' फिल्म राजकपूर के द्वारा उनके जीवन में की गई सभी फिल्मों में से सबसे खूबसरत फिल्म मानी जाती है। राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

राजकपूर जानते थे कि 'तीसरी कसम' फिल्म शैलेंद्र की पहली फिल्म है इसलिए उन्होंने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। परन्तु शैलेंद्र को न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी। 'तीसरी कसम' चाहे आज बहुत कामयाब फिल्मों में गिनी जाती हो, लेकिन यह एक कड़वा सच रहा है कि इसे परदे पर दिखाने और प्रसारित करने के लिए लोग बहुत ही मुश्किल से मिले थे। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए

आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था।

'श्री 420' का एक गीत - 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति -'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ', इस पंक्ति में संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति जताई थी। लेकिन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

शैलेंद ने जो भी गीत लिखे वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे

परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। इसी विशेषता को उन्होंने अपनी जिंदगी में भी अपनाया था और अपनी फिल्म में भी इसी विशेषता को साबित किया था।

'तीसरी कसम' अगर सिर्फ एकलौती नहीं तो उन कुछ सफल फिल्मों में जरूर है जिन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। 'तीसरी कसम' फिल्म की यह खास बात थी कि उसमें दुःख को किसी भी तरह बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत नहीं किया गया था उसमे दुःख को जीवन की सही परिस्थितियों की ही भाँति प्रस्तुत किया गया था। 'तीसरी कसम' की जो मुख्य कहानी है वह खुद लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने लिखी है। कहानी का एक छोटे-से-छोटा भाग, उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह से दिखाई देती है|

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए

प्रश्न **1 -** 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता क्यों कहा है **?**

उत्तर -'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सेल्यूलाइट का अर्थ होता है कि कहानी को हु-ब-हु कैमरे की सहायता से परदे पर उतरना और इस फिल्म में हिंदी साहित्य की एक दिल को छू लेने वाली कहानी को बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चलचित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस फिल्म के कविता के सभी भाग जैसे -भावुकता, संवेदना और मार्मिकता भरी हुई थी इसीलिए कहा जाता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

प्रश्न 2 - 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था इसीलिए 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 3 - शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर -शैलेंद्र के अनुसार दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

प्रश्न 4 - फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर - फिल्मों में अगर फिल्मों में कहीं त्रासद अर्थात दुखद स्थितियों का वर्णन किया जाता है तो उसको बहुत अधिक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। दुःख को इतना अधिक भयानक रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फिल्मों की ओर आकर्षित हो सकें।

प्रश्न 5 - 'शैलेंद ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

प्रश्न 6 - लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - शोमैन का अर्थ होता है जो अपने अभिनय से लोगो को आकर्षित कर सके, अपने निभाय गए किरदार से जो सबको मनोरंजित करे और अंत तक लोगो को अपने अभिनय के साथ जोड़ कर रखे। ये सारी खूबियाँ राजकपूर में कूट-कूट कर भरी थी इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

प्रश्न 7 - 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की ?

उत्तर - 'श्री 420' के गीत - 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका मानना था कि दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। सामान्यतः दिशायें चार ही कही जाती हैं और संगीतकार जयकिशन भी चार दिशाओं का ही प्रयोग करना चाहते थे।

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए

प्रश्न **1 -** 'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता क्यों कहा है **?**

उत्तर -'तीसरी कसम' फिल्म को सेल्यूलाइट पर लिखी कविता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सेल्यूलाइट

का अर्थ होता है कि कहानी को हु-ब-हु कैमरे की सहायता से परदे पर उतरना और इस फिल्म में हिंदी साहित्य की एक दिल को छू लेने वाली कहानी को बड़ी ही सफलता के साथ कैमरे की रील में उतार कर चलचित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस फिल्म के कविता के सभी भाग जैसे -भावुकता, संवेदना और मार्मिकता भरी हुई थी इसीलिए कहा जाता है कि 'तीसरी कसम' फिल्म नहीं बल्कि कवि शैलेंद्र द्वारा कैमरे की रील पर लिखी गई एक कविता थी।

प्रश्न 2 - 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे ?

उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था इसीलिए 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 3 - शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर -शैलेंद्र के अनुसार दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।

प्रश्न 4 - फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर - फिल्मों में अगर फिल्मों में कहीं त्रासद अर्थात दुखद स्थितियों का वर्णन किया जाता है तो उसको बहुत अधिक बड़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है। दुःख को इतना अधिक भयानक रूप से प्रस्तुत किया जाता है कि वो लोगो को भावनात्मक रूप से कमजोर कर सके और लोग ज्यादा-से-ज्यादा फिल्मों की ओर आकर्षित हो सकें।

प्रश्न 5 - 'शैलेंद ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' - इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - राजकपूर को एशिया के सबसे बड़े शोमैन का ख़िताब हासिल था। वे अपनी आँखों से अभिनय करने और अपनी आँखों से ही भावनाओं को दिखने में माहिर थे। इसके विपरीत शैलेंद्र एक उमदा गीतकार थे जो भावनाओं को कविता का रूप देने में माहिर थे। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को अपनी कविता और फिल्म की कहानी में शब्द रूप दिए और राजकपूर ने भी उनको बड़ी ही खूबी से निभाया।

प्रश्न 6 - लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - शोमैन का अर्थ होता है जो अपने अभिनय से लोगो को आकर्षित कर सके, अपने निभाय गए किरदार से जो सबको मनोरंजित करे और अंत तक लोगो को अपने अभिनय के साथ जोड़ कर रखे। ये सारी खूबियाँ राजकपूर में कूट-कूट कर भरी थी इसीलिए लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है।

प्रश्न 7 - लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, आप कहा तक सहमत हैं ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - शैलेंद्र ने ऐसी फिल्म बनाई थी जिसे सिर्फ एक सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था क्योंकि इतनी भावुकता केवल एक कवि के हृदय में ही हो सकती है।यह फिल्म कला से परिपूर्ण थी जिसके लिए इस फिल्म की बहुत तारीफ़ हुई थी। इस फिल्म में शैलेंद्र की भावुकता पूरी तरह से दिखाई देती है। इस फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तौला जा सकता था। शैलेंद्र के द्वारा लिखे गीतों में सच्ची भावना झलकती है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था। लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि-हृदय ही बना सकता था, हम पूरी तरह सहमत हैं।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए
1 - ......वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार सम्पति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।
उत्तर - जब राजकपूर ने एक अच्छे और सच्चे मित्र के नाते शैलेंद्र को फिल्म की असफलता के खतरों से भी परिचित करवाया। तो शैलेन्द्र ने उनकी बात नहीं मणि क्योंकि शैलेन्द्र एक भावनात्मक कवि था, जिसको न तो अधिक धन-सम्पति का लालच था न ही नाम कमाने की इच्छा। उसे तो केवल अपने आप से संतोष की कामना थी।
2 - उनका दृढ़ मंतव्य था कि दर्शकों की रूचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।
उत्तर - जब संगीतकार जयकिशन ने गीत 'प्यार हुआ, इकरार हुआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' की एक पंक्ति 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' में आपत्ति जताई थी,और उनका कहना था कि दर्शकों को चार दिशायें तो समझ आ सकती है परन्तु दर्शक दस दिशाओं को समझने में परेशान हो सकते हैं। लेकिन शैलेन्द्र इस पंक्ति को बदलने के लिए तैयार नहीं हुए। वे चाहते थे कि दर्शकों की पसंद को ध्यान में रख कर किसी भी फिल्म निर्माता को कोई भी बिना मतलब की चीज़ दर्शकों को नहीं दिखानी चाहिए। उनका मानना था कि एक कलाकार का यह कर्तव्य भी है कि वह दर्शकों की पसंद को अच्छा और सुंदर भी बनाने की कोशिश करे।/p>
3 - व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संकेत देती है।
उत्तर - शैलेन्द्र के गीतों में सिर्फ दुःख-दर्द नहीं होता था, उन दुखों से निपटने या उनका सामना करने का इशारा भी होता था। और वो सारी क्रिया-प्रणाली भी मौजूद रहती थी जिसका सहारा ले कर कोई भी

व्यक्ति अपनी मंजिल तक पहुँच सकता है। उनका मानना था कि दुःख कभी भी इंसान को हरा नहीं सकता बल्कि हमेशा आगे बढ़ने का इशारा देता है।

4 - दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने का गणित जानने वाले की समझ से परे थी।
उत्तर - 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी में जो भावनाएँ थी उनको समझना किसी मुनाफा कमाने वालों के लिए आसान नहीं था। इस फिल्म में जिस करुणा के साथ भावनाओं को दर्शाया गया था उनको किसी तराज़ू में नहीं तोला जा सकता था।

5 - उनके गीत भाव-प्रणव थे-दुरूह नहीं।
उत्तर - शैलेंद ने जो भी गीत लिखे, वे सभी बहुत पसंद किये जाते रहे है। शैलेंद्र ने कभी भी झूठे रंग-ढ़ग या दिखावे को नहीं अपनाया। वे अपने गीतों में भावनाओं को अधिक महत्त्व देने वाले थे न की अपने गीतों को कठिन बनाने वाले। 'मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इंग्लिस्तानी, सर पे लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी' -यह गीत शैलेंद्र ही लिख सकते थे, क्योंकि इसमें सच्ची भावना झलक रही है। उनके गीत नदी की तरह शांत तो लगते थे परन्तु उनका अर्थ समुद्र की तरह गहरा होता था।

पाठ -5-पर्वत प्रदेश में पावस

कवि - सुमित्रानंदन पंत

जन्म -20 मई 1900 (उत्तराखंड - कौसानी अलमोड़ा)

मृत्यु - 28 दिसम्बर 1977

पर्वत प्रदेश में पावस पाठ प्रदेश

भला ऐसा भी कोई इंसान हो सकता है जो पहाड़ों पर ना जाना चाहता हो। जिन लोगों को दूर हिमालय पर जाने का मौका नहीं मिल पाता वो लोग अपने आसपास के पहाड़ी इलाकों में जाने का कोई मौका नहीं छोड़ते। जब आप पहाड़ों को याद कर रहें हों और ऐसे में किसी कवि की कविता अगर कक्षा में बैठे बैठे ही आपको ऐसा एहसास करवा दे की आप अभी अभी पहाड़ों से घूम कर आ रहे हों तो बात ही अलग होती है।

प्रस्तुत कविता भी इसी तरह के रोमांच और प्रकृति के सुन्दर वर्णन से भरी है जिससे आपकी आंखों और मन दोनों को आनंद आएगा। यही नहीं सुमित्रानंदन पंत की बहुत सारी कविताओं को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे आपके चारों ओर की दीवारे कहीं गायब हो गई हों और आप किसी सुन्दर पर्वतीय जगह पर पहुँच गए हों। जहाँ दूर दूर तक पहाड़ ही पहाड़ हों और झरने बह रहे हों और आप बस वहीं रहना चाह रहे हों।

महाप्राण निराला जी ने भी पंत जी के बारे में कहा था कि उनकी सबसे बड़ी प्रतिभा यह है कि वे अपनी कृतियों को अधिक से अधिक सुन्दर बना देते हैं जिसे पढ़ कर या सुन कर बहुत आनंद आता है।

पर्वत प्रदेश में पावस पाठ सार

कवि ने इस कविता में प्रकृति का ऐसा वर्णन किया है कि लग रहा है कि प्रकृति सजीव हो उठी है। कवि कहता है कि वर्षा ऋतु में प्रकृति का रूप हर पल बदल रहा है कभी वर्षा होती है तो कभी धूप निकल आती है। पर्वतों पर उगे हजारों फूल ऐसे लग रहे है जैसे पर्वतों की आँखे हो और वो इन आँखों के सहारे अपने आपको अपने चरणों ने फैले दर्पण रूपी तालाब में देख रहे हों। पर्वतो से गिरते हुए झरने कल कल की मधुर आवाज कर रहे हैं जो नस नस को प्रसन्नता से भर रहे हैं। पर्वतों पर उगे हुए पेड़ शांत आकाश को ऐसे देख रहे हैं जैसे वो उसे छूना चाह रहे हों। बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों,चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

पर्वत प्रदेश में पावस पाठ की व्याख्या
पावस ऋतु थी ,पर्वत प्रवेश ,
पल पल परिवर्तित प्रकृति -वेश।
पावस ऋतु - वर्षा ऋतु
परिवर्तित - बदलना
प्रकृति -वेश -- प्रकृति का रूप

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत जी 'हैं। इसमें कवि ने वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया है।
व्याख्या -: कवि कहता है कि पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु का प्रवेश हो गया है। जिसकी वजह से प्रकृति के रूप में बार बार बदलाव आ रहा है अर्थात कभी बारिश होती है तो कभी धूप निकल आती है।

अपने सहस्र दृग- सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार ,
नीचे जल ने निज महाकार ,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल !

शब्दार्
मेखलाकार - करघनी के आकर की पहाड़ की ढाल
सहस्र - हज़ार
दृग -सुमन - पुष्प रूपी आँखे
अवलोक - देखना
महाकार - विशाल आकार
ताल - तालाब
दर्पण - आईना
प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत जी 'हैं। इसमें कवि ने पर्वतों का सजीव चित्रण किया है।
व्याख्या -: इस पद्यांश में कवि ने पहाड़ों के आकार की तुलना करघनी अर्थात कमर में बांधने वाले आभूषण से की है । कवि कहता है कि करघनी के आकर वाले पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़

कर नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहे हैं।ऐसा लग रहा है कि पहाड़ ने जिस तालाब को अपने चरणों में पाला है वह तालाब पहाड़ के लिए विशाल आईने का काम कर रहा है।

अपने सहस्र दृग- सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार ,
नीचे जल ने निज महाकार ,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण सा फैला है विशाल !

शब्दार्

मेखलाकार - करघनी के आकर की पहाड़ की ढाल
सहस्र - हज़ार
दृग -सुमन - पुष्प रूपी आँखे
अवलोक - देखना
महाकार - विशाल आकार
ताल - तालाब
दर्पण - आईना

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत जी 'हैं। इसमें कवि ने पर्वतों का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या -: इस पद्यांश में कवि ने पहाड़ों के आकार की तुलना करघनी अर्थात कमर में बांधने वाले आभूषण से की है । कवि कहता है कि करघनी के आकर वाले पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहे हैं।ऐसा लग रहा है कि पहाड़ ने जिस तालाब को अपने चरणों में पाला है वह तालाब पहाड़ के लिए विशाल आईने का काम कर रहा है।

गिरि का गौरव गाकर झर -झर
मद में नस -नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों- से सुन्दर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ -उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
है झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष ,अटल कुछ चिंतापर।

गिरि - पहाड़
मद - मस्ती
झग - फेन
उर – हृदय
उच्चांकाक्षा - ऊँच्चा उठने की कामना
तरुवर -पेड़
नीरव नभ शांत - शांत आकाश
अनिमेष - एक टक

प्रसंग -: प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत जी 'हैं। इसमें कवि ने झरनों की सुंदरता का वर्णन किया है।

व्याख्या -: इस पद्यांश में कवि कहता है कि मोतियों की लड़ियों के समान सुंदर झरने झर झर की आवाज करते हुए बह रहे हैं ,ऐसा लग रहा है की वे पहाड़ों का गुणगान कर रहे हों। उनकी करतल ध्वनि नस नस में उत्साह अथवा प्रसन्नता भर देती है।

पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं, मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों। अर्थात वे हमें निरन्तर ऊँच्चा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।

उड़ गया ,अचानक लो ,भूधर
फड़का अपार पारद * के पर !
रव -शेष रह गए हैं निर्झर !
है टूट पड़ा भू पर अम्बर !
धँस गए धारा में सभय शाल !
उठ रहा धुआँ ,जल गया ताल !
-यों जलद -यान में विचर -विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

भूधर - पहाड़
पारद * के पर- पारे के समान धवल एवं चमकीले पंख
रव -शेष - केवल आवाज का रह जाना
सभय - भय के साथ
शाल- एक वृक्ष का नाम

जलद -यान - बादल रूपी विमान

विचर- घूमना

इंद्रजाल - जादूगरी

□□□□□□ ञ(प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिंदी की पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श - भाग 2' से लिया गया है। इसके कवि 'सुमित्रानंदन पंत जी 'हैं। इसमें कवि ने बारिश के कारण प्रकृति का बिल्कुल बदला हुआ रूप दर्शाया है।

व्याख्या :(इस पद्यांश में कवि कहता है कि तेज बारिश के बाद मौसम ऐसा हो गया है कि घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं। चारों ओर धुँआ होने के कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई है। ऐसा लग रहा है कि ऐसे मौसम में इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

पर्वत प्रदेश में पावस प्रश्न अभ्यास (महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर)

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -:

प्रश्न 1-: पावस ऋतु में प्रकृति में कौन -कौन से परिवर्तन आते हैं ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-: वर्षा ऋतु में मौसम हर पल बदलता रहता है। कभी तेज़ बारिश आती है तो कभी मौसम साफ हो जाता है। पर्वत अपनी पुष्प रूपी आँखों से अपने चरणों में स्थित तालाब में अपने आप को देखता हुआ प्रतीत होता है। बादलों के धरती पर आ जाने के कारण ऐसा लग रहा है कि जैसे आसमान धरती पर आ गया हो और कोहरा धुएं की तरह लग रहा है जिसके कारण लग रहा है कि तालाब में आग लग गई हो।

प्रश्न 2-: 'मेखलाकार ' शब्द का क्या अर्थ है ?कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

उत्तर -: 'मेखलाकार ' शब्द का अर्थ है - करघनी अर्थात कमर का आभूषण। कवि ने यहाँ इस शब्द का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि वर्षा ऋतु में पर्वतों की श्रृंखला करघनी की तरह टेडी मेडी लग रही है। अतः कवि ने पर्वतों की श्रृंखला की तुलना करघनी से की है।

प्रश्न 3-: 'सहस्र दृग - सुमन ' से क्या तात्पर्य है ?कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा ?

उत्तर-: 'सहस्र दृग - सुमन ' से कवि का तात्पर्य पहाड़ों पर खिले हजारों फूलों से है। कवि को ये फूल पहाड़ ही आंखों के समान लग रहे हैं अतः कवि ने इस पद का प्रयोग किया है।

प्रश्न 4-: कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों ?

उत्तर-: कवि ने तालाब की समानता आईने के साथ दिखाई है क्योंकि तालाब पर्वत के लिए आईने का काम कर रहा है वह स्वच्छ और निर्मल दिखाई दे रहा है।

प्रश्न 5 -: पर्वत के ह्रदय से उठ कर ऊँचे ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं ?

उत्तर-: पर्वत पर उगे ऊँचे ऊँचे वृक्ष चिंता में डूबे हुए लग रहें हैं जैसे वे शांत आकाश को छूना चाहते हों। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की और संकेत कर रहे हैं।

प्रश्न 6 -: शाल के वृक्ष भयभीत हो कर धरती में क्यों धस गए हैं ?

उत्तर-: घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पेड़ कही उड़ गए हों अर्थात गायब हो गए हों। ऐसा लग रहा है कि पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है। प्रकृति का ऐसा भयानक रूप देख कर शाल के पेड़ डर कर धरती के अंदर धंस गए हैं।

प्रश्न 7-: झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं ?बहते हुए झरने की तुलना किस से की गई है ?

उत्तर-: झरने पर्वतों के गौरव का गान कर रहे हैं और बहते हुए झरनों की तुलना चमकदार मोतियों से की गई है।

(ख)निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए :-

1-: है टूट पड़ा भू पर अम्बर !

भाव-: घनी धुंध के कारण लग रहा है मानो पूरा आकाश ही धरती पर आ गया हो केवल झरने की आवाज़ ही सुनाई दे रही है।

2-: -[illegible]
[illegible]

भाव-: चारों और धुँआ होने के कारण लग रहा है कि इंद्र भी अपना बादल रूपी विमान ले कर इधर उधर जादू का खेल दिखता हुआ घूम रहा है।

3-: [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भाव-: पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों। अर्थात वे हमें निरन्तर ऊँच्चा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं। ये वृक्ष मनुष्यों की सदा ऊपर उठने और आगे बढ़ने की और संकेत कर रहे हैं।

[illegible]

1-: [illegible] **?** [illegible]

उत्तर-: इस कविता में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग जगह जगह किया गया है जिसके कारण प्राकृति सजीव प्रतीत हो रही है। जैसे - पहाड़ अपनी हजार पुष्प रूपी आंखें फाड़ कर नीचे जल में अपने

विशाल आकार को देख रहे हैं। और पहाड़ों के हृदय से उठ-उठ कर अनेकों पेड़ ऊँच्चा उठने की इच्छा लिए एक टक दृष्टि से स्थिर हो कर शांत आकाश को इस तरह देख रहे हैं मनो वो किसी चिंता में डूबे हुए हों।

2-: आपकी दृष्टि में इस कविता का सौन्दर्य इसमें से किस पर निर्भर करता है ?

(क) अनेक शब्दों की आवृति पर

(ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर

(ग) कविता की संगीतात्मकता पर

उत्तर- (ख) शब्दों की चित्रमयी भाषा पर

क्योंकि इस कविता में चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए प्रकृति का सुंदर और सजीव वर्णन किया गया है।

3-: कवि ने चित्रात्मक शैली का प्रयोग करते हुए पावस ऋतु का सजीव चित्र अंकित किया है ऐसे स्थलों को छाँट कर लिखिए।

उत्तर-:1- अपने सहस्र दृग- सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार बार ,

2- गिरि का गौरव गाकर झर- झर

3- धँस गए धारा में सभय शाल !

4- गिरिवर के उर से उठ -उठ कर

-⁎-व्याकरण-

‘शब्द , पद, पदबंध‘

शब्द:-

शब्द दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बने उस समूह को कहते हैं जिसका कोई निर्दिष्ट अर्थ हो, जैसे – पानी

यह शब्द चार वर्णों के मेल से बना है- प्+आ+न्+ई = पानी

पानी शब्द सुनते या देखते ही हमारे मस्तिष्क में एक ऐसे तरल द्रव्य का चित्र उभरता है जिसे पीकर हम अपनी प्यास बुझाते हैं।

माता –म+आ+त+आ=

शब्द और अर्थ का संबंध:-

शब्द और अर्थ का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध। जिन शब्दों के अर्थ न हो उसे शब्द की श्रेणी में रखा ही नहीं जा सकता है, जैसे- नीपा ये शब्द भी चार वर्णों न्+ई+प्+आ के संयोग से बना है परंतु इसका कोई अर्थ नहीं अर्थात् इसे सार्थक शब्द नहीं कहा जाएगा।

शब्द के अर्थ का बोध

शब्द के अर्थ का बोध हमें दो प्रकार से होता है पहला आत्म-अनुभव और दूसरा पर-अनुभव से।

आत्म-अनुभव – जब हम स्वयं किसी चीज़ का अनुभव करते हैं जैसे – 'चीनी मीठी होती है' में मीठी शब्द के अर्थ का बोध हमें स्वयं चीनी चखने से हो जाता है। ठीक इसी प्रकार पानी, गर्मी, धूप इत्यादि

पर-अनुभव - अर्थ के बोध का अनेक क्षेत्र ऐसा भी होता है जहाँ हमारी पहुँच नहीं होती और हमें अर्थ बोध के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जैसे हममें से बहुत से लोगों ने जहर नहीं देखा होगा लेकिन हमने दूसरों से यह सुन रखा है कि इसको खाने से मौत हो जाती है। ठीक इसी प्रकार – आत्मा, ईश्वर, मोक्ष इत्यादि शब्दों के अर्थ बोध के लिए हमें दूसरों के अनुभव की ज़रूरत पड़ती है।

शब्दों के भेद निम्नलिखित आधार पर किए जाते हैं –

1. उत्पत्ति के आधार पर
2. बनावट के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –

इस आधार पर शब्दों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है –

(क) तत्सम शब्द-जो शब्द अपरिवर्तित रूप में संस्कृत भाषा से लिए गए हैं या जिन्हें संस्कृत के मूल शब्दों से संस्कृत के ही
प्रत्यय लगाकर नवनिर्मित किया गया है, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तत्सम शब्द दो शब्दों से बना है, 'तत्' और 'सम' जिसका अर्थ है उसके अनुसार अर्थात् संस्कृत के अनुसार। तत्सम शब्दों के कुछ उदाहरण-प्रौद्योगिकी, आकाशवाणी, आयुक्त, स्वप्न, कूप, उलूक, चूर्ण, चौर, यथावत, कर्म, कच्छप, कृषक, कोकिल, अक्षि, तैल, तीर्थ, चैत्र, तपस्वी, तृण, त्रयोदश, कन्दुक, उच्च, दश, दीपक, धूलि, नासिका आदि।

(ख) तद्भव शब्द-जो शब्द संस्कृत भाषा से उत्पन्न तो हुए हैं, पर उन्हें ज्यों का त्यों हिंदी में प्रयोग नहीं किया जाता है। इनके रूप में परिवर्तन आ जाता है। इनको तद्भव शब्द कहते हैं।

तद्भव शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है; जैसे – 'तद्' और 'भव'। जिसका अर्थ है-उसी से उत्पन्न। तद्भव शब्दों के कुछ उदाहरण – काजर, सूरज, रतन, परीच्छा, किशन, अँधेरा, अनाड़ी, ईख, कुम्हार, ताँबा, जोति, जीभ, ग्वाल, करतब, कान, साँवला, साँप, सावन, भाप, लोहा, मारग, मक्खी , भीषण, पूरब, पाहुन, बहरा, बिस आदि।

(ग) देशज शब्द-वे शब्द जिनका स्रोत संस्कृत नहीं है किंतु वे भारत में ग्राम्य क्षेत्रों अथवा जनजातियों में बोली जाने वाली तथा संस्कृत से भिन्न भाषा परिवारों के हैं। देशज शब्द कहलाते हैं। ये शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में प्रयुक्त होते हैं।

देशज शब्दों के कुछ उदाहरण-कपास, अंगोछा, खिड़की, ठेठ, टाँग, झोला, रोटी, लकड़ी, लागू, खटिया, डिबिया, तेंतुआ, थैला, पड़ोसी, खोट, पगिया, घरौंदा, चूड़ी, जूता, दाल, ठेस, ठक-ठक, झाड़ आदि।

(घ) आगत या विदेशी शब्द-विदेशी भाषाओं से संपर्क के कारण अनेक शब्द हिंदी में प्रयोग होने लगे हैं। ये शब्द ही आगत या विदेशी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में प्रयुक्त विदेशी शब्द निम्नलिखित हैं –

- अरबी शब्द-बर्फ, बगीचा, कानून, काज़ी, ऐब, कसूर, किताब, करामात, कत्ल, कलई, रिश्वत, मक्कार, मीनार, फ़कीर, नज़र, नखरा, तहसीलदार, अदालत, अमीर, बाज़ार, बेगम, जवाहर, दगा, गरीब, खुफिया, वसीयत, बहमी, फ़ौज, दरवाज़ा, कदम आदि।
- फारसी शब्द-नालायकी, शादी, शेर, चापलूस, चादर, जिंदा, ज़बान, जिगर, दीवार, गरदन, चमन, चरबी, खार, गरीब, खत, खान, कारतूस, आतिशी, अनार, कम, कफ़, कमर, आफ़त, गरीब, अब्र, अबरी, गुनाह, सब्जी, चाकू, सख्त आदि।
- अंग्रेज़ी शब्द-पार्क, राशन, अफ़सर, अंकल, अंडर, सेक्रेटरी, बटन, कंप्यूटर, ओवरकोट, कूपन, गैस, कार्ड, चार्जर, चॉक, चॉकलेट, चिमनी, वायल सरकस, हरीकेन, हाइड्रोजन, स्टूल, स्लेट, स्टेशन, लाटरी, लेबल, सिंगल, सूट, मील, मोटर, मेम्बर, रिकॉर्ड, मेल, रेडियो, प्लेटफार्म, बाम, बैरक, डायरी, ट्रक, ड्राइवर आदि।

- पुर्तगाली शब्द-मिस्त्री, साबुन, बालटी, फालतू, आलू, आलपीन, अचार, काजू, आलमारी, कमीज़, कॉपी, गमला, चाबी, गोदाम, तौलिया, तिजोरी, पलटन, पीपा, पादरी, फीता, गमला, गोभी, प्याला आदि।
- चीनी शब्द-चाय, लीची, पटाखा व तूफ़ान आदि।
- यूनानी शब्द-टेलीफ़ोन, टेलीग्राम, डेल्टा व ऐटम आदि।
- जापानी शब्द-रिक्शा।
- फ्रांसीसी शब्द-कॉर्ट्रन, इंजन, इंजीनियर, बिगुल व पुलिस आदि।

2. बनावट या रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –
बनावट की भिन्नता के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है।

(क) रूढ़ शब्द-जिन शब्दों के सार्थक खंड न किए जा सकें तथा जो शब्द लंबे समय से किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयोग हो रहे हैं, उन्हें रूढ़ शब्द कहते हैं।

रूढ़ शब्द के कुछ उदाहरण-ऊपर (ऊ + प + र), नीचे (नी + चे), पैर (पै + र), कच्चा (क + च् + चा), कमल (क + म + ल), फूल (फू + ल), वृक्ष (वृ + क्ष), रथ (र + थ), पत्ता (प + त् + ता) आदि।

(ख) यौगिक शब्द-दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों द्वारा निर्मित शब्दों को यौगिक शब्द कहते हैं। यौगिक शब्दों के कुछ
उदाहरण –

रसोईघर = रसोई + घर
अनजान = अन + जान
अभिमानी = अभि + मानी
पाठशाला = पाठ + शाला
रेलगाड़ी = रेल + गाड़ी
ईमानदार = ईमान + दार
हिमालय = हिम + आलय
हमसफ़र = हम + सफ़र
आज्ञार्थ = आज्ञा + अर्थ
वाचनालयाध्यक्ष = वाचन + आलय + अध्यक्ष

(ग) योगरूढ़ शब्द-जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं। योगरूढ़ शब्दों के उदाहरण –

चिड़ियाघर = चिड़िया + घर = शाब्दिक अर्थ = पक्षियों का घर।
विशेष अर्थ = सभी प्रकार के पशु-पक्षियों के रखे जाने का स्थान ।
पंकज = पंक + ज = शाब्दिक अर्थ = कीचड़ में उत्पन्न।
विशेष अर्थ = कमल।
श्वेतांबरा = श्वेत + अंबर + आ = शाब्दिक अर्थ = सफ़ेद वस्त्रों वाली।
विशेष अर्थ = सरस्वती।
नीलकंठ = नील + कंठ शाब्दिक अर्थ = नीला कंठ।
विशेष अर्थ = शिव जी।
दशानन = दश + आनन = शाब्दिक अर्थ = दस मुँह वाला।
विशेष अर्थ = रावण।
लंबोदर = लंबा + उदर = शाब्दिक अर्थ = लंबे उदर वाला।
विशेष अर्थ = गणेश।

3. प्रयोग के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण –
प्रयोग के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं –

(क) सामान्य शब्द-जिन शब्दों का प्रयोग दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में होता है, उन्हें सामान्य शब्द कहते हैं। उदाहरण-रोटी, पुस्तक, कलम, साइकिल, शिशु, मेज़, लड़का आदि।

(ख) अर्ध तकनीकी शब्द-जो शब्द दिन-प्रतिदिन के कार्य-व्यवहार में भी प्रयोग में लाए जाते हैं तथा किसी विशेष उद्देश्य के लिए ही इनका प्रयोग किया जाता है, उन्हें अर्ध तकनीकी शब्द कहते हैं।
उदाहरण – दावा, आदेश, रस।

(ग) तकनीकी शब्द-किसी क्षेत्र विशेष में प्रयोग की जाने वाली शब्दावली के शब्दों को तकनीकी शब्द कहते हैं।
उदाहरण – विधि (कानून) के क्षेत्र में प्रयोग किए जाने वाले शब्द – विधि, विधेयक, संविधान, प्रविधि आदि।
इसी प्रकार–प्रशासन, बैंक, चिकित्सा, विज्ञान, अर्थशास्त्र के क्षेत्रों से संबंधित शब्द हैं-महानिदेशक, आयोग, समिति, कार्यवृत्त, सीमा शुल्क, सूचकांक, पदोन्नति, शेयर, कार्यशाला, आरक्षण आदि।
साहित्य में भी ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है – संधि, समास, उपसर्ग, रूपक, दोहा, रस आदि।

4. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण
अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद किए गए हैं –

(क) निरर्थक शब्द-जो शब्द अर्थहीन होते हैं, निरर्थक शब्द कहलाते हैं। ये शब्द सार्थक शब्दों के पीछे लग उनका अर्थ-विस्तार करते हैं।
उदाहरण-

- लड़का पढ़ने में ठीक-ठाक है।
- घर में फुटबॉल मत खेलो, कहीं कुछ टूट-फूट गया तो मार पड़ेगी।

(ख) सार्थक शब्द-जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं।
उदाहरण – कोयल, पशु, विचित्र, कर्तव्य, संसार आदि।
सार्थक शब्द अनेक प्रकार के है –

(i) एकार्थी शब्द-जिन शब्दों का केवल एक निश्चित अर्थ होता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण-हाथी, ईश्वर, पति, पुस्तक, शत्रु, मित्र, कमरा आदि।

(ii) अनेकार्थी शब्द-जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।
उदाहरण- अर्थ – मतलब, प्रयोजन, धन।
कर – हाथ, टैक्स, किरण।
अंबर – आकाश, कपड़ा, सुगंधित पदार्थ।
काल – समय, अवधि, मौसम।
आम – सामान्य, एक फल, मामूली।
काम – कार्य, मतलब, संबंध, नौकरी।

(iii) समानार्थी या पर्यायवाची शब्द-जो शब्द एक समान (लगभग एक सा ही) अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। पर्याय का अर्थ है दूसरा अर्थात् उसी प्रयोजन या वस्तु के लिए दूसरा शब्द। इनका अर्थ लगभग एक समान होता है पर पूर्ण रूप से समान नहीं।

उदाहरण – कमल – शतदल, वारिज, जलज, नीरज, पंकज, अंबुज।
पेड़ – विटप, पादप, वृक्ष, द्रुम, रूख, तरु।
आकाश – नभ, गगन, आसमान, अंबर।
पक्षी – खग, विहग, विहंगम, द्विज, खेचर।
धरती – भू, भूमि, धरा, वसुंधरा।
अँधेरा – अंधकार, तम, तिमिर, हवांत।

(iv) विपरीतार्थक शब्द-हिंदी भाषा के प्रचलित शब्दों के विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विपरीतार्थक शब्द कहते हैं।

उदाहरण – कटु – मधुर
आदि – अंत
उपकार – अपकार
हार – जीत
अनुज – अग्रज
आदर – निरादर, अनादर
आय – व्यय
चतुर – मूर्ख

पद

पद- शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ जाते हैं तब वे पद कहलाते हैं और ये पद वाक्य के आंशिक भाव को प्रकट करते हैं।
यहाँ आपके लिए यह जान लेना आवश्यक है कि व्याकरणिक इकाइयाँ होती क्या है?
संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, क्रिया,काल आदि व्याकरणिक बिन्दुओं को ही व्याकरणिक इकाइयाँ कहते हैं। माँ कब से खाना बना रहीं हैं|
माँ –एक वचन,स्त्रीलिंग,जातिवाचक
खाना -बहुवचन, जातिवाचक
कब से –काल
बना रहीं हैं- क्रिया ,वर्तमानकाल
उदाहरण के लिए एक शब्द है- 'राजा' अब हम इसे वाक्य में प्रयोग करेंगे।
राजा हरिश्चंद्र बहुत बड़े दानवीर थे।
यहाँ 'राजा' शब्द न रहकर पद में बदल चुका है क्योंकि एक तो यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह हरिश्चंद्र की विशेषता बता रहा है कि वे एक राजा थे।
दूसरा वाक्य
भारत के लगभग सभी राजाओं ने राजकुमारी संयुक्ता के स्वयंवर में भाग लिया।

यहाँ 'राजाओं' शब्द भी पद में बदल चुका है क्योंकि यहाँ भी यह व्याकरणिक इकाइयों से जुड़ गया है और दूसरा यह भारत के सभी राजाओं के बारे में बता रहा है।

इसे और स्पष्ट करने के लिए हमें यह जान लेना ज़रूरी है कि यह पद कौन-कौन से व्याकरणिक इकाइयों से अनुशासित हुआ है-

राजाओं – संज्ञा-जातिवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, भाग लिया क्रिया का कर्ता

इस प्रक्रिया को पद परिचय कहते हैं।

पदबंध

पद से बड़ी इकाई को पदबंध कहते हैं या एकाधिक पद को पदबंध कहते हैं।

पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं –

संज्ञा पदबंध

सर्वनाम पदबंध

विशेषण पदबंध

क्रिया पदबंध

क्रियाविशेषण पदबंध

इन पाँचों पदबंधों पर हम एक एक करके विचार करेंगे

संज्ञा पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में संज्ञा का काम करे उसे संज्ञा पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?

उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक

आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मिल रहे थे।

प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मिल रहा था?

उत्तर – आम

सर्वनाम पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में सर्वनाम का काम करे उसे सर्वनाम पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कौन और क्या लगाकर सवाल बनाए जैसे-

काम करते-करते वह थक गया।

प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?

उत्तर –वह

दूध में कुछ गिर गया है।

प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?

उत्तर – कुछ

विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में विशेषण काम करे उसे विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कैसे लगाकर सवाल बनाए जैसे-

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर – ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न – कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर – मेहनत से जी चुराने वाले

क्रिया पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया काम करे उसे क्रिया पदबंध कहते हैं। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है जैसे-

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

क्रिया विशेषण पदबंध

वाक्य की जो व्याकरणिक इकाई वाक्य में क्रिया विशेषण काम करे उसे क्रिया विशेषण पदबंध कहते हैं इसे पहचानने का तरीका है कि इसमें क्रिया की विशेषता का बोध होता है इसमें क्रिया के साथ कितना, कहाँ, कैसे और कब आदि लगाकर प्रश्न बनाए जाते हैं, जैसे-

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कितना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खिड़की से बाहर

गाड़ी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़

राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।

प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?

उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों

इसके अतिरिक्त रेखांकित पदबंधों के अंतिम शब्द के आधार पर भी हम पदबंध का निर्धारण कर सकते हैं, जैसे-

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

काम करते-करते वह थक गया।

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

बहुत देर हो गई है।

दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

मुहावरे-

. प्राण सूखना-डर लगना।

आतंकवादियों को देखकर गाँव वालों के प्राण सूख गए।

2. हँसी-खेल होना-छोटी-मोटी बात।

जंगल में अकेले जाना कोई हँसी-खेल नहीं होता

3. आँखें फोड़ना-बड़े ध्यान से पढ़ना।

कक्षा में प्रथम आने के लिए निखिल आँखें फोड़कर पढ़ाई करता है।

4. गाढ़ी कमाई–मेहनत की कमाई।
तुम तो अपनी गाढ़ी कमाई जुएँ में उड़ा रहे हो।

5. ज़िगर के टुकड़े-टुकड़े होना-दिल पर भारी आघात लगना।
बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर माता-पिता के जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो गए।

6. हिम्मत टूटना-साहस समाप्त होना।
परीक्षा में असफल होने पर पिता की हिम्मत टूट गई।

7. जान तोड़ मेहनत करना-खूब परिश्रम होना।
मैच जीतने के लिए सभी खिलाड़ियों ने जान-तोड़कर मेहनत की।

8. दबे पाँव आना-चोरी-चोरी आना।
चोर ने दबे पाँव आकर घर का सारा सामान साफ़ कर दिया।

9. घुडकियाँ खाना-डाँट-डपट सहना।
बड़े भाईसाहब की घुडकियाँ खाकर अचानक छोटे भाई ने मुँह खोल दिया।

10. आड़े हाथों लेना-कठोरतापूर्ण व्यवहार करना।
गलती करके पकड़े जाने पर माता-पिता ने पुत्र को आड़े हाथों लिया।

11. घाव पर नमक छिड़कना-दुखी को और दुखी करना।
एक तो वह पहले से ही दुखी है, तुम उसे चिढ़ाकर उसके घाव पर नमक क्यों छिड़क रहे हो।

12. तलवार खींचना-लड़ाई के लिए तैयार रहना।
छोटे भाई को गुंडों से पिटता देखकर बड़े भाइयों ने तलवार खींच ली।

13. अंधे के हाथ बटेर लगना-अयोग्य को कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु मिलना।
अनपढ़ श्याम की सरकारी नौकरी लग गई। ऐसा लगता है जैसे अंधे के हाथ बटेर लग गई।

14. चुल्लूभर पानी देने वाला-कठिन समय में साथ देने वाला।
अगर तुम किसी की मदद नहीं करोगे तो तुम्हें भी कोई बाद में चुल्लू भर पानी देने वाला नहीं मिलेगा।

15. दाँतों पसीना आना-बहुत अधिक परेशानी उठाना।
शादी वाले घर में इतने काम होते हैं कि जिन्हें निपटाते निपटाते दाँतों पसीने आ जाते हैं।

16. लोहे के चने चबाना-बहुत कठिनाई उठाना।
कक्षा में प्रथम आने के लिए करन को पीछे करना लोहे के चने चबाने जैसा है।

17. चक्कर खाना-भ्रम में पड़ना।
रवि-चेतन की एक जैसी शक्ल देखकर लोग चक्कर खा गए।

18. आटे-दाल का भाव मालूम होना-कठिनाई का अनुभव होना।
दोस्तों के पैसों पर ऐश करने वालों को जब स्वयं कमाना पड़ता है तब उन्हें आटे-दाल का भाव मालूम होता है।

19. ज़मीन पर पाँव न रखना-बहुत खुश होना।
बेटे को सफ़ल देखकर उसके माता-पिता ज़मीन पर पाँव न रख सके।

20. हाथ-पाँव फूल जाना-परेशानी देखकर घबरा जाना।
मनोज को नौकरी से निकाले जाने की खबर सुनकर उसकी पत्नी के हाथ-पाँव फूल गए।

पाठ-2 : डायरी का एक पन्ना

1. रंग दिखाना-प्रभाव या स्वरूप दिखाना।
कठिनाई के समय मदद न करके देव ने अपना रंग दिखा दिया।

2. ठंडा पड़ना-ढीला पड़ना।
शादी की तैयारियाँ अभी पूरी भी नहीं हुई हैं। पता नहीं घर वाले इतने ठंडे क्यों पड़ गए हैं।

3. टूट जाना-बिखर जाना।
बड़े भाईसाहब की खबर सुनकर पूरा परिवार बिखर गया।

पाठ-3 : तताँरा-वामीरो कथा

1. सुध-बुध खोना-अपने वश में न रहना।
उस आकर्षक युवती को देखकर चेतन अपनी सुध-बुध खो बैठा।

2. बाट जोहना-प्रतीक्षा करना।
राम कब से माता के साथ बाज़ार जाने की बाट जोह रहा है।

3. खुशी का ठिकाना न रहना-बहुत अधिक खुशी होना।
लड़की का रिश्ता तय होने पर परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा।

4. आग-बबूला होना-बहुत क्रोध आना।
कक्षा में फेल होने की बात सुनकर पिता आग-बबूला हो गए।

5. राह. न सूझना-उपाय न मिलना।
आतंकवादियों के पकड़े जाने पर यात्रियों को बचने की कोई राह न सूझी।

6. सुराग न मिलना-पता न मिलना।
चोर घर में चोरी करके चला गया परंतु पुलिस को कोई सुराग न मिला।

पाठ-4 : तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

1. चक्कर खाना-घबरा जाना।
परीक्षा में प्रश्न-पत्र देखकर मैं तो चकरा गया।

2. सातवें आसमान पर होना-ऊँचाई पर होना।
आजकल की महँगाई तो सातवें आसमान पर पहुँच गई है।

3. तराजू पर तोलना-उचित-अनुचित का निर्णय लेना।
मुँह से कुछ बोलने से पहले उसको तराजू पर तोल लेना चाहिए।

4. हावी होना-अधिक प्रभावी होना।
आजकल तो अमीर लोग गरीबों पर हावी होने की कोशिश करते हैं।

अन्य-

1-आकाश के तारे तोड़नाअसंभव काम करना।-
साइकिल से देश भ्रमण करना आकाश के तारे तोड़ने जैसा है|
2-आस्तीन का साप-कपटी मित्र।
राम पर विश्वास न करना। वह तो आस्तीन का साँप है।

3. आग में घी डालना-क्रोध को भड़काना।
पठानकोट हमले ने आग में घी डालने का काम किया है।

4. इधर-उधर की हाँकना-व्यर्थ बोलना।
रवि के पास कोई काम तो है नहीं इसलिए वो इधर-उधर की हाँकता रहता है।

5. ईद का चाँद होना-बहुत दिनों बाद दिखाई देना।
विदेश में रहने के कारण तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।

6. ईंट का जवाब पत्थर से देना-दुष्ट से दुष्टता करना।
युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

7. ईंट से ईंट बजाना-तहस-नहस कर देना।
भारतीयों ने आतंकवादियों की ईंट से ईंट बजा दी।

8. उल्लू बनाना-मूर्ख बनाना।
पाँच रुपये का सामान दस रुपये में देकर दुकानदार ने तुम्हें उल्लू बना दिया।

9. उन्नीस-बीस होना-थोड़ा-बहुत होना।
दोनों कपड़ों में उन्नीस-बीस का अंतर है।

10. उँगली उठाना-दोष निकालना।
बात-बात पर उँगली उठाना आजकल की पत्नियों का पेशा-सा बन गया है।

*-अनुच्छेद लेखन-

१-ग्लोबल वार्मिंगमनुष्यता के लिए खतरा--

- ग्लोबल वार्मिंग क्या है ?
- ग्लोबल वार्मिंग के कारण
- ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव
- समस्या का समाधान

गत एक दशक में जिस समस्या ने मनुष्य का ध्यान अपनी ओर खींचा है, वह हैग्लोबल वार्मिंग। -धरती के तापमान में निरंतर वृद्धि। यद्यपि यह समस्या -सा अर्थ है है-ग्लोबल वार्मिंग का सीधा विकसित देशों के कारणबढ़ी है परंतु इसका नुकसान सारी धरती को भुगतना पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारणों के मूल हैंमनुष्य की बढ़ती आवश्यकताएँ और उसकी स्वार्थवृत्ति। मनुष्य प्रगति की -कारखानों की स्थापना-अंधाधुंध दौड़ में शामिल होकर पर्यावरण को अंधाधुंध क्षति पहुँचा रहा है। कल, नई बस्तियों को बसाने, सड़कों को चौड़ा करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई की गई है|इससे पर्यावरण को दोतरफा नुकसान हुआ है तो इन गैसों को अपनाने वाले पेड़पौधों की कमी से आक्सीजन-, वर्षा की मात्रा और हरियाली में कमी आई है। इस कारण वैश्विक तापमान बढ़ता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण एक ओर धरती की सुरक्षा कवच ओजोन में छेद हुआ है तो दूसरी ओर पर्यावरण असंतुलित हुआ है। असमय वर्षा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सरदीगरमी की ऋतुओं में भारी बदलाव आना -ग्लोबल वार्मिंग का ही प्रभाव है।
इससे ध्रुवों पर जमी बरफ़ पिघलने का खतरा उत्पन्न हो गया है जिससे एक दिन प्राणियों के विनाश का खतरा होगा, अधिकाधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल करनी चाहिए तथा प्रकृति से छेड़छाड़ बंद -कर देना चाहिए। इसके अलावा जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करना होगा। आइए इसे आज से शुरू कर देते हैं, क्योंकि कल तक तो बड़ी देर हो जाएगी|

२-बच्चों की शिक्षा में मातापिता की भूमिका--

- शिक्षा और माता-पिता
- शिक्षा की महत्ता
- उत्तरदायित्व
- शिक्षाविहीन नर पशु समान।

मातापिता बच्चे के लिए शत्रु के समान होते हैं जो अपने बच्चों को शिक्षा नहीं देते। ये बच्चे शिक्षितों - की सभा में उसी तरहहोते हैं जैसे हंसों के बीच बगुला। एक बच्चे के लिए परिवार प्रथम पाठशाला होती है और मातापिता यहाँ अभी अपनी भूमिका का उचित निर्वाह तो -पिता उसके प्रथम शिक्षक। माता-दीक्षा पर ध्यान -करते हैं पर जब बच्चा विद्यालय जाने लायक होता है तब कुछ माता पिता उनके शिक्षा नहीं देते हैं और अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं। ऐसे में बालक जीवन भर के लिए निरक्षर की विशेष महत्ता एवं उपयोगिता है|

शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय हो जाता है। कभी वह साहूकारों के चंगल में फँसता है तो कभी लोभी दकानदारों के। उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर होता है। वह समाचार पत्रपत्रिकाओं ., पुस्तकों आदि का लाभ नहीं उठा पाता है। उसे कदम-कदम पर कठिनाइयों का सामना करना पडता है ऐसे में माता-पोषण के साथ ही उनकी शिक्षा की भली प्रकार -पिता का उत्तरदायित्व है कि वे अपने बच्चों के पालन व्यवस्था करें। कहा गया है कि विद्याविहीन नर की स्थिति पशुओं जैसी होती है, बस वह घास नहीं खाता है। शिक्षा से ही मानव सभ्य इनसान बनता है। हमें भूलकर भी शिक्षा से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए|

३-दिनोंदिन बढ़ती महँगाई-

- महँगाई और आम आदमी पर प्रभाव
- कारण
- महँगाई रोकने के उपाय
- सरकार के कर्तव्य

- महँगाई उस समस्या का नाम है, जो कभी थमने का नाम नहीं लेती है। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के साथ ही गरीब वर्ग को जिस समस्या ने सबसे ज्यादा त्रस्त किया है वह महँगाई ही है। समय बीतने के साथ ही वस्तुओं का मूल्य निरंतर बढ़ते जाना महँगाई कहलाता है। इसके कारण वस्तुएँ आम आदमी की क्रयशक्ति से बाहर होती जाती हैं और ऐसा व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताएँ तक पूरा नहीं कर पाता है।

- ऐसी स्थिति में कई बार व्यक्ति को भूखे पेट सोना पड़ता है।महँगाई के कारणों को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इसे बढ़ाने में मानवीय और प्राकृतिक दोनों ही कारण जिम्मेदार हैं। मानवीय कारणों में लोगों की स्वार्थवृत्ति, लालच अधिकाधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति, जमाखोरी और असंतोष की भावना है। इसके अलावा त्याग जैसे मानवीय मूल्यों की कमी भी इसे बढ़ाने में आग में घी का काम करती है।

- सूखा, बाढ़ असमय वर्षा, आँधी, तूफ़ान, ओलावृष्टि के कारण जब फ़सलें खराब होती हैं तो उसका असर उत्पादन पर पड़ता है। इससे एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति पैदा होती है और महँगाई

बढ़ती है।महँगाई रोकने के लिए लोगों में मानवीय मूल्यों का उदय होना आवश्यक है ताकि वे अपनी आवश्यकतानुसार ही वस्तुएँ खरीदें। इसे रोकने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर लगाम लगाना आवश्यक है।

- महँगाई रोकने के लिए सरकारी प्रयास भी अत्यावश्यक है। सरकार को चाहिए कि वह आयात-निर्यात नीति की समीक्षा करे तथा जमाखोरों पर कड़ी कार्यवाही करें और आवश्यक वस्तुओं का वितरण रियायती मूल्य पर सरकारी दुकानों के माध्यम से क

===

वर्णों के जोड़ से शब्द बनते है –सही शब्दों के जोड़ से वाक्य बन्ता है|

वाक्य के अंग (Vakya ke Ang)

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

(1) उद्देश्य →

जैसे → वैशाली कपड़े धो रही थी |

दमयंती ने खाना बनाया |

→ वाक्य में जिसके विषय में बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं |

→ उद्देश्य के अंतर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार आता है |

(2) विधेय →

जैसे → रोहन झगड़ रहा था |

राधा सितार बजा रही है |

वाक्य के भेद)Vakya ke bhed)

(1) अर्थ के आधार पर (Arth ke aadhar par vakya ke bhed)

(2) रचना के आधार पर (Rachna ke aadhar par vakya ke bhed)

(1) विधानवाचक वाक्य

(2) निषेधवाचक वाक्य

(3) विस्मयवाचक वाक्य

(4) संदेहवाचक वाक्य

(5) आज्ञावाचक वाक्य

(6) संकेतवाचक वाक्य

(7) इच्छावाचक वाक्य

(8) प्रश्नवाचक वाक्य

(1) विधानवाचक वाक्य→

→ जिस वाक्य में किसी बात या कार्य के होने या करने का सामान्य कथन हो, उसे विधानवाचक वाक्य कहते है |

जैसे → वेदांत विद्यालय जा रहा है |

→ बलवीर ने भाषण दिया |

(2) निषेधवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में क्रिया के करने या होने का निषेध हो, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → मैं बाजार नहीं जाऊँगा |

→ मोहन घूमने नहीं जा रहा |

(3) आज्ञावाचक वाक्य→

जिस वाक्य से आज्ञा, अनुमति, विनय या अनुरोध का बोध हो, उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → कृपया हस्ताक्षर कर दीजिए |

तुम अंदर जाकर पढ़ाई करो

(4) प्रश्नवाचक वाक्य→

जिन वाक्यों द्वारा प्रश्न करने का भाव प्रकट होता है, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → राहुल को किसने डाँट दिया **?**

आपको किससे मिलना है **?**

(5) इच्छावाचक वाक्य→

जिस वाक्यों से इच्छा, आशीर्वाद, कामना, शुभकामना आदि का भाव प्रकट होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) आपकी यात्रा मंगलमय हो |

(2) ईश्वर तुम्हें लंबी आयु दे |

(6) संदेहवाचक वाक्य→

ऐसे वाक्य जिनसे कार्य के होने या न होने के प्रति संदेह या संभावना प्रकट होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) शायद कल वर्षा हो जाए |

(2) लगता है आज बारिश होगी |

(7) संकेतवाचक वाक्य→

जिस वाक्य में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं |

जैसे → (1) पानी न बरसता, तो धान सूख जाता |

(2) यदि पेड़ लगाएँगे, तो वायु शुद्ध होगी |

(8) विस्मयवाचक वाक्य→

जिस वाक्य से हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों का बोध होता है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं |जैसे → (1) बाप रे १ इतना मोटा चूहा |

(2) वाह १ कितनी सुंदर फुलवारी है |

2.वाक्य के प्रकार:-

1. सरल वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्रित वाक्य
4. (1) सरल वाक्य→

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं |

जैसे → राम ने रावण को मारा

उद्देश्य = राम ने

विधेय = रावण को मारा |

अमित खाना खा रहा है |

उद्देश्य = अमित

विधेय = खाना खा रहा है |

(2) संयुक्त वाक्य→

जिस वाक्य में दो-या-दो से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक या समुच्चयबोधक अव्यय द्वारा जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं |

उदाहरण

(1) हमने फिल्म का टिकट खरीदा [illegible] सिनेमा हॉल चले गए |

(2) पिताजी बाजार गए [illegible] हमारे लिए मिठाई लाए |

(3) मिश्रित वाक्य→

जिस वाक्य में एक से अधिक सरल वाक्य इस प्रकार जुड़े हो कि उनमें एक प्रधान उपवाक्य तथा अन्य आश्रित उपवाक्य हों | उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं |

जैसे → वेदांत ने कहाँ कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

प्रधान उपवाक्य = वेदांत ने कहाँ

आश्रित उपवाक्य = कि मैं गाँव नहीं जाऊँगा |

(2) वे सफल होते हैं जो परिश्रम करते है |

प्रधान उपवाक्य = वे सफल होते हैं

आश्रित उपवाक्य = जो परिश्रम करते है |

रचना के आधार पर वाक्यों में परिवर्तन

सरल वाक्य

चाय या कॉफी में से कोई पी लेंगे |

माँ ने गोलू को डाँटकर सुलाया |

संयुक्त वाक्य

चाय पी लेंगे या कॉफी पी लेंगे

माँ ने गोलू को डाँटा और सुला दिया

सरल वाक्य

लापरवाह मजदूर छत से गिर गया |

ईमानदार व्यक्ति का सभी आदर करते हैं |

मिश्र वाक्य

जो मज़दूर लापरवाह था, वह छत से गिर गया |

जो व्यक्ति ईमानदार होता है, सभी उसका आदर करते हैं |

संयुक्त वाक्य

शालू आई और पढ़ने लगी |

घबराओ मत और कविता सुनाओ |

सरल वाक्य

शालू आकर पढ़ने लगी |

बिना घबराए कविता सुनाओ |

(संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य)

संयुक्त वाक्य

घंटी बज गई और बच्चे कक्षा में जाने लगे |

राधा आई तो रेखा चली गई |

मिश्र वाक्य

जब घंटी बजी तब बच्चे कक्षा में जाने लगे |

जब राधा आई तब रेखा चली गई |

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य

(1) कक्षा में अध्यापक आते ही सभी शांत हो गए | (सरल वाक्य)

कक्षा में अध्यापक आए और सभी शांत हो गए | (संयुक्त वाक्य)

जैसे ही कक्षा में अध्यापक आए वैसे ही सब शांत हो गए| (मिश्र वाक्य)

(2) माँ के आते ही दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (सरल वाक्य)

माँ आई और दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (संयुक्त वाक्य)

ज्यों ही माँ आई दोनों बच्चे उनसे लिपट गए | (मिश्र वाक्य)

*-सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन:-

(1)सरल वाक्य- अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।

संयुक्त वाक्य- वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।

(2)सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

(3)सरल वाक्य- गरीब को लूटने के अतिरिक्त उसने उसकी हत्या भी कर दी।

संयुक्त वाक्य- उसने न केवल गरीब को लूटा, बल्कि उसकी हत्या भी कर दी।

(4)सरल वाक्य- पैसा साध्य न होकर साधन है।

संयुक्त वाक्य- पैसा साध्य नहीं है, किन्तु साधन है।

(5)सरल वाक्य- अपने गुणों के कारण उसका सब जगह आदर-सत्कार होता है।

संयुक्त वाक्य- उसमें गुण थे, इसलिए उसका सब जगह आदर-सत्कार होता था।

(6)सरल वाक्य- दोनों में से कोई काम पूरा नहीं हुआ।

संयुक्त वाक्य- न एक काम पूरा हुआ न दूसरा।

(7) सरल वाक्य- पंगु होने के कारण वह घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

संयुक्त वाक्य- वह पंगु है इसलिए घोड़े पर नहीं चढ़ सकता।

(8) सरल वाक्य- परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

संयुक्त वाक्य- परिश्रम करो और सफलता प्राप्त करो।

(9) सरल वाक्य- रमेश दण्ड के भय से झूठ बोलता रहा।

संयुक्त वाक्य- रमेश को दण्ड का भय था, इसलिए वह झूठ बोलता रहा।

(10) सरल वाक्य- वह खाना खाकर सो गया।

संयुक्त वाक्य- उसने खाना खाया और सो गया।

(11) सरल वाक्य- उसने गलत काम करके अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य- उसने गलत काम किया और अपयश कमाया।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)संयुक्त वाक्य- सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।

सरल वाक्य- सूर्योदय होने पर कुहासा जाता रहा।

(2)संयुक्त वाक्य- जल्दी चलो, नहीं तो पकड़े जाओगे।

सरल वाक्य- जल्दी न चलने पर पकड़े जाओगे।

(3)संयुक्त वाक्य- वह धनी है पर लोग ऐसा नहीं समझते।

सरल वाक्य- लोग उसे धनी नहीं समझते।

(4)संयुक्त वाक्य- वह अमीर है फिर भी सुखी नहीं है।

सरल वाक्य- वह अमीर होने पर भी सुखी नहीं है।

(5)संयुक्त वाक्य- बाँस और बाँसुरी दोनों नहीं रहेंगे।

सरल वाक्य- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(6)संयुक्त वाक्य- राजकुमार ने भाई को मार डाला और स्वयं राजा बन गया।

सरल वाक्य- भाई को मारकर राजकुमार राजा बन गया।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1)सरल वाक्य- उसने अपने मित्र का पुस्तकालय खरीदा।

मिश्र वाक्य- उसने उस पुस्तकालय को खरीदा, जो उसके मित्र का था।

(2)सरल वाक्य- अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।

मिश्र वाक्य- जो लड़के अच्छे होते है, वे परिश्रमी होते हैं।

(3)सरल वाक्य- लोकप्रिय कवि का सम्मान सभी करते हैं।

मिश्र वाक्य- जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।

(4)सरल वाक्य- लड़के ने अपना दोष मान लिया।

मिश्र वाक्य- लड़के ने माना कि दोष उसका है।

(5)सरल वाक्य- राम मुझसे घर आने को कहता है।

मिश्र वाक्य- राम मुझसे कहता है कि मेरे घर आओ।

(6)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।

मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ खेलूँ।

(7)सरल वाक्य- आप अपनी समस्या बताएँ।

मिश्र वाक्य- आप बताएँ कि आपकी समस्या क्या है ?

(8)सरल वाक्य- मुझे पुरस्कार मिलने की आशा है।

मिश्र वाक्य- आशा है कि मुझे पुरस्कार मिलेगा।

(9)सरल वाक्य- महेश सेना में भर्ती होने योग्य नहीं है।

मिश्र वाक्य- महेश इस योग्य नहीं है कि सेना में भर्ती हो सके।

(10)सरल वाक्य- राम के आने पर मोहन जाएगा।

मिश्र वाक्य- जब राम जाएगा तब मोहन आएगा।

(11)सरल वाक्य- मेरे बैठने की जगह कहाँ है ?

मिश्र वाक्य- वह जगह कहाँ है जहाँ मैं बैठूँ ?

(12)सरल वाक्य- मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
मिश्र वाक्य- मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ व्यापार करूँ।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष घोषित किया।
(2)मिश्र वाक्य- मुझे बताओ कि तुम्हारा जन्म कब और कहाँ हुआ था।
सरल वाक्य- तुम मुझे अपने जन्म का समय और स्थान बताओ।
(3)मिश्र वाक्य- जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
सरल वाक्य- परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।
(4)मिश्र वाक्य- ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा त्यों ही घण्टा बजा।
सरल वाक्य- मेरे वहाँ पहुँचते ही घण्टा बजा।
(5)मिश्र वाक्य- यदि पानी न बरसा तो सूखा पड़ जाएगा।
सरल वाक्य- पानी न बरसने पर सूखा पड़ जाएगा।
(6)मिश्र वाक्य- उसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ।
सरल वाक्य- उसने अपने को निर्दोष बताया।
(7)मिश्र वाक्य- यह निश्चित नहीं है कि वह कब आएगा?
सरल वाक्य- उसके आने का समय निश्चित नहीं है।
(8)मिश्र वाक्य- जब तुम लौटकर आओगे तब मैं जाऊँगा।
सरल वाक्य- तुम्हारे लौटकर आने पर मैं जाऊँगा।
(9)मिश्र वाक्य- जहाँ राम रहता है वहीं श्याम भी रहता है।
सरल वाक्य- राम और श्याम साथ ही रहते हैं।
(10)मिश्र वाक्य- आशा है कि वह साफ बच जाएगा।
सरल वाक्य- उसके साफ बच जाने की आशा है।

संयुक्त वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन

(1) संयुक्त वाक्य- सूर्य निकला और कमल खिल गए।
मिश्र वाक्य- जब सूर्य निकला, तो कमल खिल गए।
(2) संयुक्त वाक्य- छुट्टी की घंटी बजी और सब छात्र भाग गए।
मिश्र वाक्य- जब छुट्टी की घंटी बजी, तब सब छात्र भाग गए।
(3)संयुक्त वाक्य- काम पूरा कर डालो नहीं तो जुर्माना होगा।
मिश्र वाक्य- यदि काम पूरा नहीं करोगे तो जुर्माना होगा।
(4)संयुक्त वाक्य- इस समय सर्दी है इसलिए कोट पहन लो।
मिश्र वाक्य- क्योंकि इस समय सर्दी है, इसलिए कोट पहन लो।

(5)संयुक्त वाक्य- वह मरणासन्न था, इसलिए मैंने उसे क्षमा कर दिया।

मिश्र वाक्य- मैंने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह मरणासन्न था।

(6)संयुक्त वाक्य- वक्त निकल जाता है पर बात याद रहती है।

मिश्र वाक्य- भले ही वक्त निकल जाता है, फिर भी बात याद रहती है।

(7)संयुक्त वाक्य- जल्दी तैयार हो जाओ, नहीं तो बस चली जाएगी।

मिश्र वाक्य- यदि जल्दी तैयार नहीं होओगे तो बस चली जाएगी।

(8)संयुक्त वाक्य- इसकी तलाशी लो और घड़ी मिल जाएगी।

मिश्र वाक्य- यदि इसकी तलाशी लोगे तो घड़ी मिल जाएगी।

(9)संयुक्त वाक्य- सुरेश या तो स्वयं आएगा या तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य- यदि सुरेश स्वयं न आया तो तार भेजेगा।

मिश्र वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन

(1)मिश्र वाक्य- वह उस स्कूल में पढ़ा जो उसके गाँव के निकट था।

संयुक्त वाक्य- वह स्कूल में पढ़ा और वह स्कूल उसके गाँव के निकट था।

(2)मिश्र वाक्य- मुझे वह पुस्तक मिल गई है जो खो गई थी।

संयुक्त वाक्य- वह पुस्तक खो गई थी परन्तु मुझे मिल गई है।

(3)मिश्र वाक्य- जैसे ही उसे तार मिला वह घर से चल पड़ा।

संयुक्त वाक्य- उसे तार मिला और वह तुरन्त घर से चल पड़ा।

(4)मिश्र वाक्य- काम समाप्त हो जाए तो जा सकते हो।

संयुक्त वाक्य- काम समाप्त करो और जाओ।

(5)मिश्र वाक्य- मुझे विश्वास है कि दोष तुम्हारा है।

संयुक्त वाक्य- दोष तुम्हारा है और इसका मुझे विश्वास है।

(6)मिश्र वाक्य- आश्चर्य है कि वह हार गया।

संयुक्त वाक्य- वह हार गया परन्तु यह आश्चर्य है।

(7)मिश्र वाक्य- जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

संयुक्त वाक्य- जो जैसा बोएगा वैसा ही काटेगा।

अर्थ की दृष्टि से वाक्य में परिवर्तन

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद हम पढ़ चुके हैं। उनका भी रूपान्तरण हो सकता है। एक वाक्य का उदाहरण देखिए-

विधानवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।

निषेधवाचक- अनुपमा पुस्तक नहीं पढ़ेगी।

प्रश्नवाचक- क्या अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी ?

विस्मयवाचक- अरे! अनुपमा पुस्तक पढ़ेगी।

आज्ञावाचक- अनुपमा, पुस्तक पढ़ो।

इच्छावाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़ती होगी।

संकेतवाचक- अनुपमा पुस्तक पढ़े तो ......

विधिवाचक से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विधिवाचक वाक्य- वह मुझसे बड़ा है।

निषेधवाचक- मैं उससे बड़ा नहीं हूँ।

(2)विधिवाचक वाक्य- अपने देश के लिए हरएक भारतीय अपनी जान देगा।

निषेधवाचक वाक्य- अपने देश के लिए कौन भारतीय अपनी जान न देगा ?

विधानवाचक वाक्य से निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) विधानवाचक वाक्य- यह प्रस्ताव सभी को मान्य है।

निषेधवाचक- इस प्रस्ताव के विरोधाभास में कोई नहीं है।

(2) विधानवाचक वाक्य- तुम असफल हो जाओगे।

निषेधवाचक- तुम सफल नहीं हो पाओगे।

(3) विधानवाचक वाक्य- शेरशाह सूरी एक बहादुर बादशाह था।

निषेधवाचक- शेरशाह सूरी से बहादुर कोई बादशाह नहीं था।

(4) विधानवाचक वाक्य- रमेश सुरेश से बड़ा है।

निषेधवाचक- रमेश सुरेश से छोटा नहीं है।

(5) विधानवाचक वाक्य- शेर गुफा के अन्दर रहता है।

निषेधवाचक- शेर गुफा के बाहर नहीं रहता है।

(6) विधानवाचक वाक्य- मुझे सन्देह हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।

निषेधवाचक- मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह पत्र आपने लिखा।

(7) विधानवाचक वाक्य- मुगल शासकों में अकबर श्रेष्ठा था।

निषेधवाचक- मुगल शासकों में अकबर से बढ़कर कोई नहीं था।

निश्चयवाचक वाक्य से प्रश्नवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1) निश्चयवाचक- आपका भाई यहाँ नहीं हैं।

प्रश्नवाचक- आपका भाई कहाँ है ?

(2) निश्चयवाचक- किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।

प्रश्नवाचक- किस पर भरोसा किया जाए ?

(3) निश्चयवाचक- गाँधीजी का नाम सबने सुन रखा है।

प्रश्नवाचक- गाँधीजी का नाम किसने नहीं सुना?

(4) निश्चयवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास नहीं हैं।

प्रश्नवाचक- तुम्हारी पुस्तक मेरे पास कहाँ है?

(5) निश्चयवाचक- तुम किसी न किसी तरह उत्तीर्ण हो गए।

प्रश्नवाचक- तुम कैसे उत्तीर्ण हो गए?

(6) निश्चयवाचक- अब तुम बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो।

प्रश्नवाचक- क्या तुम अब बिल्कुल स्वस्थ हो गए हो?

(7) निश्चयवाचक- यह एक अनुकरणीय उदाहरण है।

प्रश्नवाचक- क्या यह अनुकरणीय उदाहरण नहीं हैं?

विस्मयादिबोधक वाक्य से विधानवाचक वाक्य में परिवर्तन

(1)विस्मयादिबोधक- वाह! कितना सुन्दर नगर है!

विधानवाचक वाक्य- बहुत ही सुन्दर नगर है!

(2) विस्मयादिबोधक- काश! मैं जवान होता।

विधानवाचक वाक्य- मैं चाहता हूँ कि मैं जवान होता।

(3) विस्मयादिबोधक- अरे! तुम फेल हो गए।

विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे फेल होने से आश्चर्य हो रहा है।

(4) विस्मयादिबोधक- ओ हो! तुम खूब आए।

विधानवाचक वाक्य- मुझे तुम्हारे आगमन से अपार ख़ुशी है।

(5) विस्मयादिबोधक- कितना क्रूर!

विधानवाचक वाक्य- वह अत्यन्त क्रूर है।

(6) विस्मयादिबोधक- क्या! मैं भूल कर रहा हूँ!

विधानवाचक वाक्य- मैं तो भूल नहीं कर रहा।

(7) विस्मयादिबोधक- हाँ हाँ! सब ठीक है।

विधानवाचक वाक्य- मैं अपनी बात का अनुमोदन करता हूँ।

समास

समास की पूरी जानकारी | समास के भेद परिभाषा और उदाहरण –Samas in hindi

इस लेख में आपको समास (हिंदी व्याकरण) से जुड़ी संपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी। जिसमे अर्थ, परिभाषा, भेद, प्रकार और उदाहरण शामिल हैं। इस विषय पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए इस लेख को अंत तक अवश्य पढ़ें।

समास का अर्थ 'संक्षिप्त' या 'संक्षेप' होता है। समास का तात्पर्य है 'संक्षिप्तीकरण'। दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए एक नवीन एवं सार्थक शब्द को समास कहते हैं। कम से कम दो शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ प्रकट करना समास का लक्ष्य होता है।

जैसे –

‘रसोई के लिए घर’ इसे हम ‘रसोईघर’ भी कह सकते हैं।

समास का प्रयोग

- संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं में समास का बहुतायत में प्रयोग होता है।
- जर्मन आदि भाषाओं में भी इस का बहुत अधिक प्रयोग होता है।
- समासिक शब्द अथवा पद को अर्थ के अनुकूल विभाजित करना विग्रह कहलाता है।

सरल भाषा में पहचानने का तरीका =>

पूर्व प्रधान – अव्ययीभाव समास

उत्तर पद प्रधान – तत्पुरुष , कर्मधारय व द्विगु

दोनों पद प्रधान – द्वंद समास

दोनों पद प्रधान – बहुव्रीहि इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व और ६ बहुब्रीहि.

१. अव्ययीभाव => पूर्वपद प्रधान होता है।

२. तत्पुरुष => उत्तरपदप्रधान होता है।

३. कर्मधारय => दोनों पद प्रधान।

४. द्विगु => पहला पद संख्यावाचक होता है।

५. द्वन्द्व => दोनों पद प्रधान होते है , विग्रह करने पर दोनों शब्द के बिच (-)हेफन लगता है।

६. बहुब्रीहि => किसी तीसरे शब्द की प्रतीति होती है।

समास की संपूर्ण जानकारी

सामासिक शब्द, समास विग्रह और पूर्व पद – उत्तर पद की जानकारी आपको नीचे दी जा रही है। उसके बाद आपको समास के भेद की विस्तार में जानकारी प्राप्त होगी।

सामासिक शब्द

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहते हैं। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न (परसर्ग) लुप्त हो जाते हैं। जैसे-राजपुत्र।

समास विग्रह (Samas vigrah) –

सामासिक शब्दों के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास-विग्रह कहलाता है।
जैसे-

- राजपुत्र राजा का पुत्र –
- देशवासी देश के वासी –
- हिमालय हिम का आलय –

पूर्वपद और उत्तरपद
समास में दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।
जैसे-गंगाजल। इसमें गंगा पूर्वपद और जल उत्तरपद है।
संस्कृत में समासों का बहुत प्रयोग होता है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी समास उपयोग होता है। समास के बारे में संस्कृत में एक सूक्ति प्रसिद्ध है:
वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।तत् पुरुष कर्म धारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः॥

समास के भेद –Samas ke bhed

सामान्यतः समास छह प्रकार के माने गए हैं। १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ द्वन्द्व and ६ बहुब्रीहि. अब हम बारीकी से समाज के प्रति एक भेद को समझेंगे और उसका गहराई से विश्लेषण करेंगे। आपको साथ ही साथ अनेकों उदाहरण भी देखने को मिलेंगे जिसके बाद आपको हर एक भेद अच्छे से समझ आएगा।

1. अवययीभाव समास:- (Avyayibhav Samas)

जिस सामासिक पद का पूर्वपद (पहला पद प्रधान) प्रधान हो , तथा समासिक पद अव्यय हो , उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इस समास में समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है।
जैसे प्रतिदिन , आमरण , यथासंभव इत्यादि।
अन्य उदाहरण

प्रति + कूल = प्रतिकूल
आ + जन्म = आजन्म
प्रति + दिन = प्रतिदिन
यथा + संभव = यथासंभव

अनु + रूप = अनुरूप।

पेट + भर = भरपेट

आजन्म – जन्म से लेकर

यथास्थान – स्थान के अनुसार

आमरण – मृत्यु तक

अभूतपूर्व – जो पहले नहीं हुआ

निर्भय – बिना भय के

निर्विवाद – बिना विवाद के

निर्विकार – बिना विकार के

प्रतिपल – हर पल

अनुकूल – मन के अनुसार

अनुरूप – रूप के अनुसार

यथासमय – समय के अनुसार

यथाक्रम – क्रम के अनुसार

यथाशीघ्र – शीघ्रता से

अकारण – बिना कारण के

अ +अंत =अनंत

2. तत्पुरुष समास (Tatpurush samas)

तत्पुरुष समास का उत्तरपद अथवा अंतिम पद प्रधान होता है। ऐसे समास में परायः प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होते हैं। द्वितीय पद के विशेष्य होने के कारण समास में इसकी प्रधानता होती है।

ऐसे समास तीन प्रकार के हैं तत्पुरुष , कर्मधारय तथा द्विगु।

तत्पुरुष समास के छः भेद हैं -

- कर्म तत्पुरुष को
- करण तत्पुरुष से (जुड़ा हुआ) के द्वारा
- संप्रदान तत्पुरुष के लिए
- अपादान तत्पुरुष से (अलग होना)
- संबंध तत्पुरुष का, की , के ,रा ,री, रे

- अधिकरण तत्पुरुष में ,पर

तत्पुरुष समास में दोनों शब्दों के बीच का कारक चिन्ह लुप्त हो जाता है।

राजा का कुमार = राजकुमार

धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ

रचना को करने वाला = रचनाकार

कर्म तत्पुरुष

इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है।

सर्वभक्षी – सब का भक्षण करने वाला

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

मनोहर – मन को हरने वाला

गिरिधर – गिरी को धारण करने वाला

कठफोड़वा – कांठ को फ़ोड़ने वाला

माखनचोर – माखन को चुराने वाला।

शत्रुघ्न – शत्रु को मारने वाला

गृहागत – गृह को आगत

मुंहतोड़ – मुंह को तोड़ने वाला

कुंभकार – कुंभ को बनाने वाला

करण तत्पुरुष

इसमें करण कारक की विभक्ति 'से' , 'के' , 'द्वारा' का लोप हो जाता है। जैसे – रेखा की , रेखा से अंकित।

सूररचित – सूर द्वारा रचित

तुलसीकृत – तुलसी द्वारा रचित

शोकग्रस्त – शोक से ग्रस्त

पर्णकुटीर – पर्ण से बनी कुटीर

रोगातुर – रोग से आतुर

अकाल पीड़ित – अकाल से पीड़ित

कर्मवीर – कर्म से वीर

रक्तरंजित – रक्त से रंजीत

जलाभिषेक – जल से अभिषेक

करुणा पूर्ण – करुणा से पूर्ण

रोगग्रस्त – रोग से ग्रस्त

मदांध – मद से अंधा

गुणयुक्त – गुणों से युक्त

अंधकार युक्त – अंधकार से युक्त

भयाकुल – भय से आकुल

पददलित – पद से दलित

मनचाहा – मन से चाहा

संप्रदान तत्पुरुष

इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति ' के लिए ' लुप्त हो जाती है।

युद्धभूमि – युद्ध के लिए भूमि

रसोईघर – रसोई के लिए घर

सत्याग्रह – सत्य के लिए आग्रह

हथकड़ी – हाथ के लिए कड़ी

देशभक्ति – देश के लिए भक्ति

धर्मशाला – धर्म के लिए शाला

पुस्तकालय – पुस्तक के लिए आलय

देवालय – देव के लिए आलय

भिक्षाटन – भिक्षा के लिए ब्राह्मण

राहखर्च – राह के लिए खर्च

विद्यालय – विद्या के लिए आलय

विधानसभा – विधान के लिए सभा

स्नानघर – स्नान के लिए घर

डाकगाड़ी – डाक के लिए गाड़ी

परीक्षा भवन – परीक्षा के लिए भवन

प्रयोगशाला – प्रयोग के लिए शाला

अपादान तत्पुरुष

इसमें अपादान कारक की विभक्ति '▯▯' लुप्त हो जाती है।

जन्मांध – जन्म से अंधा

कर्महीन – कर्म से हीन

वनरहित – वन से रहित

अन्नहीन – अन्न से हीन

जातिभ्रष्ट – जाति से भ्रष्ट

नेत्रहीन – नेत्र से हीन

देशनिकाला – देश से निकाला

जलहीन – जल से हीन

गुणहीन – गुण से हीन

धनहीन – धन से हीन

स्वादरहित – स्वाद से रहित

ऋणमुक्त – ऋण से मुक्त

पापमुक्त – पाप से मुक्त

फलहीन – फल से हीन

भयभीत – भय से डरा हुआ

संबंध तत्पुरुष

इसमें संबंध कारक की विभक्ति 'का' , 'के' , 'की' लुप्त हो जाती है।

जलयान – जल का यान

छात्रावास – छात्र का वास

चरित्रहीन – चरित्र से हीन

कार्यकर्ता – कार्य का करता

विद्याभ्यास – विद्या अभ्यास

सेनापति – सेना का पति

कन्यादान – कन्या का दान

गंगाजल – गंगा का जल

गोपाल – गो का पालक

गृहस्वामी – गृह का स्वामी

राजकुमार – राजा का कुमार

पराधीन – पर के अधीन

आनंदाश्रम – आनंद का आश्रम

राजपूत्र – राजा का पुत्र

विद्यासागर – विद्या का सागर

राजाज्ञा – राजा की आज्ञा

देशरक्षा – देश की रक्षा

शिवालय − शिव का आलय

अधिकरण तत्पुरुष

इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति ‘ में ‘ , ‘ पर ‘ लुप्त हो जाती है।

रणधीर – रण में धीर

क्षणभंगुर – क्षण में भंगुर

पुरुषोत्तम – पुरुषों में उत्तम

आपबीती – आप पर बीती

लोकप्रिय – लोक में प्रिय

कविश्रेष्ठ – कवियों में श्रेष्ठ

कृषिप्रधान − कृषि में प्रधान

शरणागत – शरण में आगत

कलाप्रवीण – कला में प्रवीण

युधिष्ठिर – युद्ध में स्थिर

कलाश्रेष्ठ – कला में श्रेष्ठ

आनंदमग्न – आनंद में मग्न

गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश

आत्मनिर्भर – आत्म पर निर्भर

शोकमग्न – शोक में मगन

धर्मवीर – धर्म में वीर

3. कर्मधारय समास (Karmdharay samas)

जिस तत्पुरुष समाज के समस्त पद समान रूप से प्रधान हो , तथा विशेष्य – विशेषण भाव को प्राप्त होते हैं। उनके लिंग , वचन भी समान हो वहां कर्मधारय समास होता है।

कर्मधारय समास चार प्रकार के होते हैं ञ
१ विशेषण पूर्वपद ,

२ विशेष्य पूर्वपद ,

३ विशेषणोभय पद तथा ,

४ विशेष्योभय पद।

आसानी से समझे तो जिस समस्त पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान – उपमेय तथा विशेषण -विशेष्य संबंध हो कर्मधारय समास कहलाता है।
पहला व बाद का पद दोनों प्रधान हो और उपमान – उपमेय या विशेषण विशेष्य से संबंध हो

==

*-पत्र-लेखन

प्रश्नः 1.
अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए जिसमें अपने परिवार की खराब आर्थिक स्थिति का उल्लेख करते हुए आर्थिक सहायता पाने का निवेदन किया गया हो।
उत्तरः

सेवा में
प्रधानाचार्य महोदय
नव सृजन पब्लिक

स्कूल सोहना रोड, गुड़गाँव
विषय-आर्थिक सहायता पाने के संबंध में

मान्यवर

विनम्र निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मेरे पिता जी जिस फैक्ट्री में काम करते थे, वह सीलिंग के कारण बंद हो गई है जिससे वे बेरोज़गार हो गए हैं। इस स्थिति में वे मेरा मासिक शुल्क, छात्रावास शुल्क, सरदी की ड्रेस आदि दिलवाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी कक्षा में गतवर्ष प्रथम आया था। इसके अलावा मैं विद्यालयी क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मुझे विद्यालय से आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शिष्य
विकास कुमार
दसवीं-ए,
अनुक्रमांक-12
10 अक्टूबर, 20XX

प्रश्नः 2.विद्यालय की प्रयोगशाला में प्रयोग करते हुए आपसे कुछ सामान टूट गया है, जिसके कारण विज्ञान शिक्षिका ने आप पर एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। इसे माफ़ कराने का निवेदन करते हुए प्रार्थना पत्र लिखिए।
उत्तरः

सेवा में
नवांकुर पब्लिक स्कूल
योग संस्थान रोड
रोहतक, हरियाणा
विषय-जुर्माना माफ़ करने के संबंध में

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। कल तीसरे पीरियड में प्रयोगशाला में प्रयोग करते समय नाइट्रिक एसिड की बोतल मेरे हाथ से छूटकर गिर गई, जिससे बोतल टूट गई और फ़र्श पर एसिड बिखर गया। यद्यपि विज्ञान शिक्षिका से मैं यह कहता रह गया कि जान-बूझकर मैंने ऐसा नहीं किया है, फिर भी उन्होंने मुझे दोषी मानते हुए एक हज़ार रुपये का जुर्माना कर दिया है। श्रीमान जी, मेरे पिता जी चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं, जो यह जुर्माना भरने में असमर्थ हैं।

अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए जुर्माना माफ़ करने की कृपा करें। भविष्य में मैं ऐसी गलती नहीं करूँगा।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मयंक मौर्य
दसवीं 'ब', अनुक्रमांक-28
28 जनवरी, 20XX

३- आप दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली मानसी शर्मा है। आपकी बड़ी बहन का विवाह पड़ने के कारण आप विद्यालय नहीं जा सकेंगी। इस संबंध में चार दिन के अवकाश हेतु अपने विद्यालय की प्रधानाचार्या को प्रार्थना पत्र लिखिए।

उत्तरः

सेवा में
प्रधानाचार्या महोदया
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-28, रोहिणी
दिल्ली
विषय-चार दिन के अवकाश के संबंध में

महोदया

विनम्र निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मेरी बड़ी बहन का विवाह आगामी 14 फरवरी, 20XX को होना तय हुआ है। विवाहोत्सव के कारण घर में मेहमानों का आना-जाना लगा हुआ है। इससे घर में काम-काज बढ़ गया है। मुझे भी घर के कार्यों में माँ का हाथ बँटाना पड़ रहा है। इस कारण मैं 13 फरवरी से 16 फरवरी, 20XX तक विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि मुझे 13 से 16 फरवरी, 20XX तक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शिष्य
मयंक मौर्य
दसवीं 'ब', अनुक्रमांक-28
28 जनवरी, 20XX

४ आपके शहर में सड़कों पर आवारा पशु घूमते रहते हैं, जिससे यातायात व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है। कई बार ये पशु दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। इन पर नियंत्रण लगाने के उददेश्य से आप किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। सेवा में
संपादक महोदय
राष्ट्रीय सहारा
कैंट रोड मेरठ (उ०प्र०)
विषय-शहर में आवारा घूमते पशुओं के संबंध में

महोदय

मैं आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से आपका ध्यान शहर की सड़कों पर आवारा घूमते पशुओं की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ जो आए दिन दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं।

विगत कुछ वर्षों से हमारे शहर में आवारा पशुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। कुछ दधिए गाय और भैंसों का सुबह-शाम दूध निकालकर उन्हें खुला छोड़ देते हैं। जिससे ये जानवर कुछ खाने की लालच में इधर-उधर और सड़कों पर घूमते हैं। इससे यातायात बाधित होता है तथा कई बार ये जानवर राहगीरों को सींग मार देते हैं। इन पशुओं के कारण कई साइकिल और मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं।

आपसे प्रार्थना है कि आप इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान दें ताकि इन्हें खुला छोड़ने वाले ग्वालों और इन्हें पकड़ने वाले कर्मचारियों का ध्यान इस ओर जाए और वे इन पर नियंत्रण करें। .

सधन्यवाद
भवदीय
रूपेश कुमार
सी-25, लोहिया नगर,
गाजियाबाद (उ०प्र०)
12 मार्च, 20xx

⁎-चित्र-लेखन-

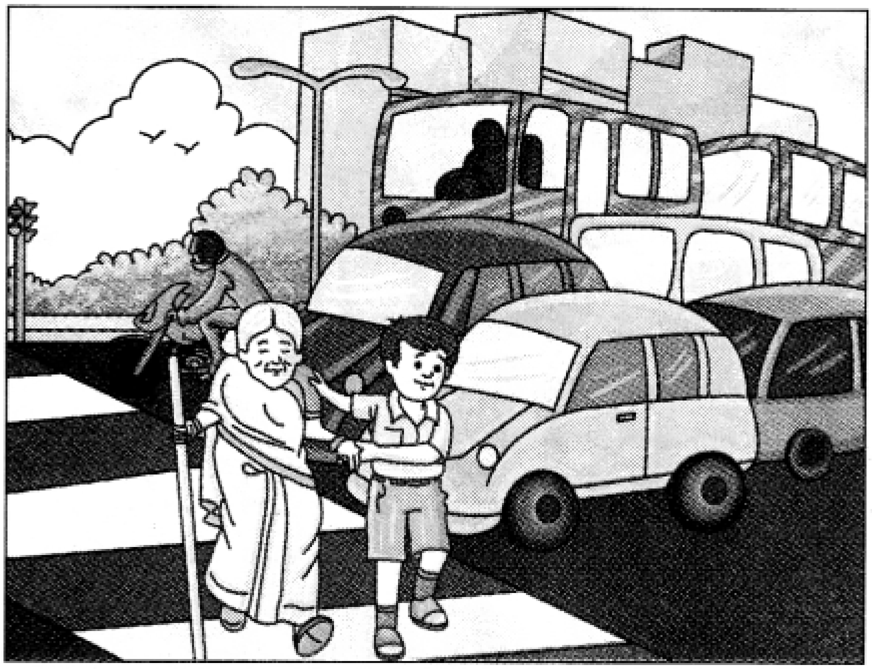

यह दृश्य किसी महानगर के चौराहे का है। लाल बत्ती होने के कारण गाड़ियाँ रुकी हुई हैं। फुटपाथ पर एक बच्चा एक वृद्ध महिला को सड़क पार करवा रहा है। एक व्यक्ति अपने स्कूटर को आधे फुटपाथ तक ले आया है यह नियम के विरुद्ध है यातायात के लिए बनाए गए नियमों का पालन न करने से ही दुर्घटनाएँ होती हैं। कुछ लोग हरी बत्ती होने का इंतजार नहीं करते और गाड़ी दौड़ाकर ले जाते हैं। ऐसा करते समय गाड़ियाँ परस्पर टकरा जाती हैं और दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए।

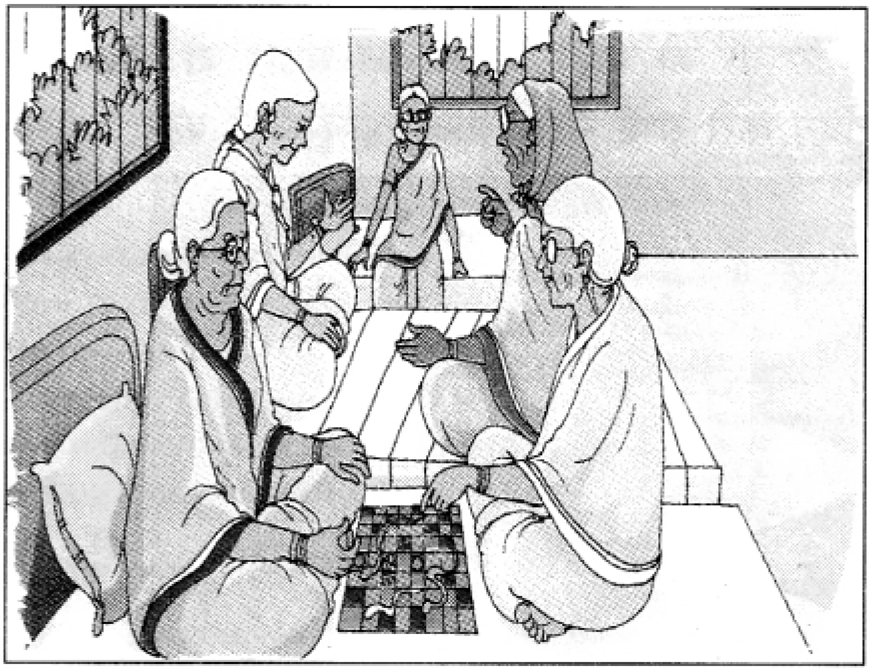

इस चित्र में एक वृद्धाश्रम का दृश्य नज़र आ रहा है। इस चित्र को देखकर हमारे समाज में फैली संवेदनहीनता की भावना उजागर हो रही है। हमारे माता-पिता या बुजुर्गों जो हमारी सामाजिक व्यवस्था के स्तंभ होते हैं, उन्हें जिस समय पारिवारिक सहयोग तथा साथ की ज़रूरत होती है उस समय वृद्धाश्रमों में भेजकर आज का युवक अपनी जिम्मेदारी से मुँह मोड़ रहा है। यहाँ सभी बुजुर्ग एक-दूसरे के साथ बातें करते, सैर करते हुए, बैठकर कैरम तथा साँप-सीढ़ी जैसे खेल खेलकर अपना मनोरंजन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सभी के चेहरे पर दिखाई देने वाली मुस्कान बता रही है कि इस पल में वे सभी प्रसन्न हैं। यदि उनकी मानसिक स्थिति की बात की जाए तो निश्चित ही कहीं किसी कोने में वे अपने परिवार, अपने बच्चों की कमी अवश्य महसूस करते होंगे। लेकिन मेरा यह सोचना है कि आज की सामाजिक व्यवस्था को देखते हुए वृद्धों के लिए इससे बेहतर और कोई जगह नहीं हो सकती जहाँ वे अपने हमउम्र के लोगों के साथ आनंदपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

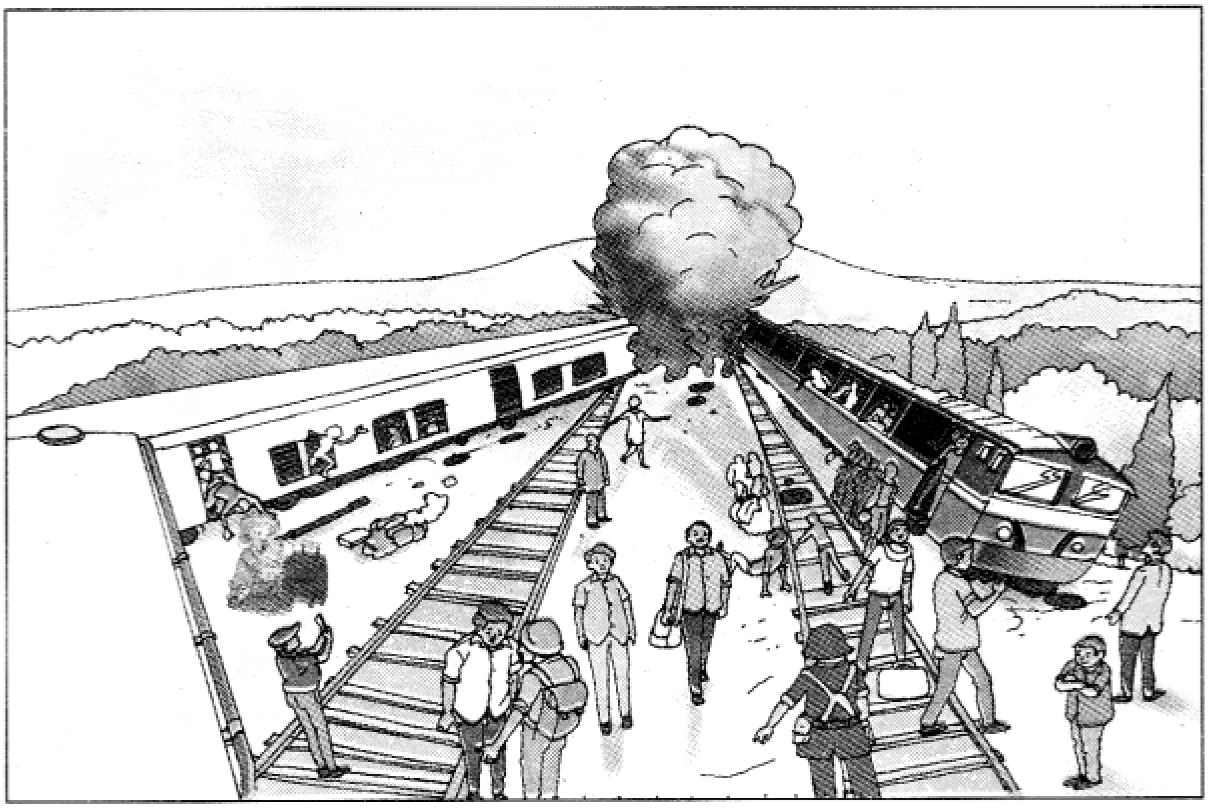

इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर रोम-रोम सिहर उठता है। रेल दुर्घटना में इंजन सहित चार डिब्बे पटरी से उतर गए हैं। जिस दूसरी ट्रेन से वह टकराई है उसके भी दो डिब्बे क्षतिग्रस्त हो गए हैं। चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल है। लोगों की चीख-पुकार से सारा वातावरण गूंज उठा है। सभी लोग असमंजस की स्थिति में नज़र आ रहे हैं। कुछ यात्री अपने साथ के यात्रियों की सहायता में जुटे हुए हैं। सेना के जवान भी लोगों की सहायता के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं। एक बच्चा अपने मृत माँ के पास बैठा रो रहा है। उस बच्चे के रोने को देख आस-पास के लोगों के हृदय भी पीडा से भर गए हैं। ऐसा लगता है कि यह आपदा प्रकति के प्रकोप की नहीं बल्कि मानवीय भल का परिणाम है। ऐसी दुर्घटनाओं को सावधान रहकर रोका जा सकता है। काश! मनुष्य अपनी लापरवाही को थोड़ी लगाम देना

व्याकरण-

वे शब्दांश, जो किसी शब्द के शुरू (आरंभ) में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे उपसर्ग मूल शब्द

अति-(आधिक्य) अतिशय, अतिरेक,

अधि-(मुख्य) अधिपति, अध्यक्ष,

अधि-(वर) अध्ययन, अध्यापन,

अनु-(मागुन) अनुक्रम, अनुताप, अनुज,

अनु-(प्रमाणें) अनुकरण, अनुमोदन,

अप-(खालीं येणें) अपकर्ष, अपमान,

अप-(विरुद्ध होणें) अपकार, अपजय,

अपि-(आवरण) अपिधान = अच्छादन,

अभि-(अधिक) अभिनंदन, अभिलाप,

अभि-(जवळ) अभिमुख, अभिनय,

अभि-(पुढें) अभ्युत्थान, अभ्युदय,

अव-(खालीं) अवगणना, अवतरण,

अव-(अभाव, विरूद्धता) अवकृपा, अवगुण,

आ-(पासून, पर्यंत) आकंठ, आजन्म,

आ-(किंचीत) आरक्त,

आ-(उलट) आगमन, आदान,

आ-(पलीकडे) आक्रमण, आकलन,

उत्-(वर) उत्कर्ष, उत्तीर्ण, उद्भिज्ज,

उप-(जवळ) उपाध्यक्ष, उपदिशा,

उप-(गौण) उपग्रह, उपवेद, उपनेत्र,

दुर्, दुस्-(वाईट) दुराशा, दुरुक्ति, दुश्चिन्ह, दुष्कृत्य,

नि-(अत्यंत) निमग्न, निबंध,

नि-(नकार) निकामी, निजोर,

निर्-(अभाव) निरंजन, निराषा,

निस् (अभाव) निष्फळ, निश्चल, निःशेष,

परा-(उलट) पराजय, पराभव,

परि-(पूर्ण) परिपाक, परिपूर्ण (व्याप्त), परिमित, परिश्रम, परिवार,

प्र-(आधिक्य) प्रकोप, प्रबल, प्रपिता,

प्रति-(उलट) प्रतिकूल, प्रतिच्छाया,

प्रति-(एकेक) प्रतिदिन, प्रतिवर्ष, प्रत्येक,

वि-(विशेष) विख्यात, विनंती, विवाद,

वि-(अभाव) विफल, विधवा, विसंगति,

सम्-(चांगले) संस्कृत, संस्कार, संगीत,

सम्-(बरोबर) संयम, संयोग, संकीर्ण,

सु-(चांगले) सुभाषित, सुकृत, सुग्रास,

सु-(सोपें) सुगम, सुकर, स्वल्प,

सु-(अधिक) सुबोधित, सुशिक्षित,

उर्दू और फ़ारसी के उपसर्ग -

उपसर्ग - अर्थ - शब्दरूप

अल - निश्चित, अन्तिम - अलविदा, अलबत्ता

कम - हीन, थोड़ा, अल्प - कमसिन, कमअक्ल, कमज़ोर

खुश - श्रेष्ठता के अर्थ में - खुशबू, खुशनसीब, खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशहाल, खुशमिजाज

ग़ैर - निषेध - ग़ैरहाज़िर ग़ैरकानूनी ग़ैरवाजिब ग़ैरमुमकिन ग़ैरसरकारी ग़ैरमुनासिब

दर - मध्य में - दरम्यान दरअसल दरहकीकत

ना - अभाव - नामुमकिन नामुराद नाकामयाब नापसन्द नासमझ नालायक नाचीज़ नापाक नाकाम

फ़ी - प्रति - फ़ीसदी फ़ीआदमी

ब - से, के, में, अनुसार - बनाम बदस्तूर बमुश्किल बतकल्लुफ़

बद - बुरा - बदनाम बदमाश बदकिस्मत बदबू बदहज़मी बददिमाग बदमज़ा बदहवास बददुआ बदनीयत बदकार

बर - पर, ऊपर, बाहर - बरकरार बरवक्त बरअक्स बरजमां कंठस्थ

बा - सहित - बाकायदा बाकलम बाइज्जत बाइन्साफ बामुलाहिज़ा

बिला - बिना - बिलावज़ह बिलालिहाज़ बिलाशक बिलानागा

बे - बिना - बेबुनियाद बेईमान बेवक्त बेरहम बेतरह बेइज्जत बेअक्ल बेकसूर बेमानी बेशक

ला - बिना, नहीं - लापता लाजबाब लावारिस लापरवाह लाइलाज लामानी लाइल्म लाज़वाल

सर - मुख्य - सरहद सरताज सरकार सरगना

अंग्रेज़ी के उपसर्ग -

क्रम उपसर्ग अर्थ शब्द

1 सब अधीन, नीचे सब-जज सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर

2 डिप्टी सहायक डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर

3 वाइस सहायक वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-प्रेसीडेंट

4 जनरल प्रधान जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी

5 चीफ़ प्रमुख चीफ़-मिनिस्टर, चीफ़-इंजीनियर, चीफ़-सेक्रेटरी

6 हेड मुख्य हेडमास्टर, हेड क्लर्क

उपसर्ग के समान प्रयुक्त संस्कृत के अव्यय -

क्रम उपसर्ग अर्थ शब्द

1 अधः नीचे अधःपतन, अधोगति, अधोमुखी, अधोलिखित

2 अंतः भीतरी अंतःकरण, अंतःपुर, अंतर्मन, अंतर्देशीय

3 अ अभाव अशोक ,अकाल, अनीति

4 चिर बहुत देर चिरंजीवी, चिरकुमार, चिरकाल, चिरायु

5 पुनर् फिर पुनर्जन्म, पुनर्लेखन, पुनर्जीवन

6 बहिर् बाहर बहिर्गमन, बहिष्कार

7 सत् सच्चा सज्जन, सत्कर्म, सदाचार, सत्कार्य

8 पुरा पुरातन पुरातत्त्व, पुरावृत्त

9 सम समान समकालीन, समदर्शी, समकोण, समकालिक

10 सह साथ सहकार, सहपाठी, सहयोगी, सहचर

उपसर्ग : अन्य अर्थ

बुरा लक्षण या अपशगुन

वह पदार्थ जो कोई पदार्थ बनाते समय बीच में संयोगवश बन जाता या निकल आता है (बाई प्राडक्ट)। जैसे-गुड़ बनाते समय जो शीरा निकलता है, वह गुड़ का उपसर्ग है।

किसी प्रकार का उत्पात, उपद्रव या विघ्न

योगियों की योगसाधना के बीच होने वाले विघ्न को उपसर्ग कहते हैं। ये पाँच प्रकार के बताए गए हैं : (1) प्रतिभ, (2) श्रावण, (3) दैव, (4)। मुनियों पर होनेवाले उक्त उपसर्गों के विस्तृत विवरण मिलते हैं। जैन साहित्य में विशेष रूप से इनका उल्लेख रहता है क्योंकि

जैन धर्म के अनुसार साधना करते समय उपसर्गो का होना अनिवार्य है और केवल वे ही व्यक्ति अपनी साधना में सफल हो सकते हैं जो उक्त सभी उपसर्गों को अविचलित रहकर झेल लें। हिंदू धर्मकथाओं में भी साधना करनेवाले व्यक्तियों को अनेक विघ्नबाधाओं का सामना करना पड़ता है किंतु वहाँ उन्हें उपसर्ग की संज्ञा यदाकदा ही गई है।

प्रत्यय

प्रत्यय (suffix) उन शब्दों को कहते हैं जो किसी अन्य शब्द के अन्त में लगाये जाते हैं। इनके लगाने से शब्द के अर्थ में भिन्नता या वैशिष्ट्य आ जाता है।

धन + वान = धनवान

विद्या + वान = विद्वान

उदार + ता = उदारता

पण्डित + ई = पण्डिताई

चालाक + ई = चालाकी

सफल + ता = सफलता

प्रत्यय के दो भेद हैं-

कृत् प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत (कृत्+अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है, तथा लेखक कृदंत शब्द है।

क्रम प्रत्यय मूल शब्दधातु उदाहरण

1 अक लेख्, पाठ्, कृ, गै लेखक, पाठक, कारक, गायक

2 अन पाल्, सह्, ने, चर् पालन, सहन, नयन, चरण

3 अना घट्, तुल्, वंद्, विद् घटना, तुलना, वन्दना, वेदना

4 अनीय मान्, रम्, दृश्, पूज्, श्रु माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय

5 आ सूख, भूल, जाग, पूज, इष्, भिक्ष् सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा

6 आई लड़, सिल, पढ़, चढ़ लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई

7 आन उड़, मिल, दौड़ उड़ान, मिलान, दौड़ान

8 इ हर, गिर, दशरथ, माला हरि, गिरि, दाशरथि, माली

9 इया छल, जड़, बढ़, घट छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया

10 इत पठ, व्यथा, फल, पुष्प पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित

11 इत्र चर्, पो, खन् चरित्र, पवित्र, खनित्र

12 इयल अड़, मर, सड़ अड़ियल, मरियल, सड़ियल

13 ई हँस, बोल, त्यज्, रेत हँसी, बोली, त्यागी, रेती

14 उक इच्छ्, भिक्ष् इच्छुक, भिक्षुक

15 तव्य कृ, वच् कर्तव्य, वक्तव्य

16 ता आ, जा, बह, मर, गा आता, जाता, बहता, मरता, गाता

17 ति अ, प्री, शक्, भज अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति

18 ते जा, खा जाते, खाते

19 त्र अन्य, सर्व, अस् अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र

20 न क्रंद, वंद, मंद, खिद्, बेल, ले क्रंदन, वंदन, मंदन, खिन्न, बेलन, लेन

21 ना पढ़, लिख, बेल, गा पढ़ना, लिखना, बेलना, गाना

22 म दा, धा दाम, धाम

23 , य गद्, पद्, कृ, पंडित, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ् गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पाश्चात्य, दंत्य, ओष्ठ्य

24 या मृग, विद् मृगया, विद्या

25 रू गे गेरू

26 वाला देना, आना, पढ़ना देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला

27 ऐयावैया रख, बच, डाँटगा, खा रखैया, बचैया, डटैया, गवैया, खवैया

28 हार होना, रखना, खेवना होनहार, रखनहार, खेवनहार

वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों- संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे- सेठ + आनी

= सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय हैं तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

क्रम प्रत्यय शब्द उदाहरण

1 आइ पछताना, जगना पछताइ, जगाइ

2 आइन पण्डित, ठाकुर पण्डिताइन, ठकुराइन

3 आई पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई

4 आनी सेठ, नौकर, मथ सेठानी, नौकरानी, मथानी

5 आयत बहुत, पंच, अपना बहुतायत, पंचायत, अपनायत

6 आर/आरा लोहा, सोना, दूध, गाँव लोहार, सुनार, दूधार, गँवार

7 आहट चिकना, घबरा, चिल्ल, कड़वा चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट

8 इल फेन, कूट, तन्द्र, जटा, पंक, स्वप्न, धूम फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पंकिल, स्वप्निल, धूमिल

9 इष्ठ कन्, वर्, गुरु, बल कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ

10 ई सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक, तेल, देहात सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली, देहाती

11 ईन ग्राम, कुल ग्रामीण, कुलीन

12 ईय भवत्, भारत, पाणिनी, राष्ट्र भवदीय, भारतीय, पाणिनीय, राष्ट्रीय

13 ए बच्चा, लेखा, लड़का बच्चे, लेखे, लड़के

14 एय अतिथि, अत्रि, कुंती, पुरुष, राधा आतिथेय, आत्रेय, कौंतेय, पौरुषेय, राधेय

15 एल फुल, नाक फुलेल, नकेल

16 ऐत डाका, लाठी डकैत, लठैत

17 एरा/ऐरा अंध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लुट अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा

18 ओला खाट, पाट, साँप खटोला, पटोला, सँपोला

19 औती बाप, ठाकुर, मान बपौती, ठकरौती, मनौती

20 औटा बिल्ला, काजर बिलौटा, कजरौटा

21 क धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक

22 कर विशेष, ख़ास विशेषकर, ख़ासकर

23 का खट, झट खटका, झटका

24 जा भ्राता, दो भतीजा, दूजा

25 ड़ा, ड़ी चाम, बाछा, पंख, टाँग चमड़ा, बछड़ा, पंखड़ी, टँगड़ी

26 त रंग, संग, खप रंगत, संगत, खपत

27 तन अद्य अद्यतन

28 तर गुरु, श्रेष्ठ गुरुतर, श्रेष्ठतर

29 तः अंश, स्व अंशतः, स्वतः

30 ती कम, बढ़, चढ़ कमती, बढ़ती, चढ़ती

लेखन-. अपने विद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 30 शब्दों में एक विज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए।

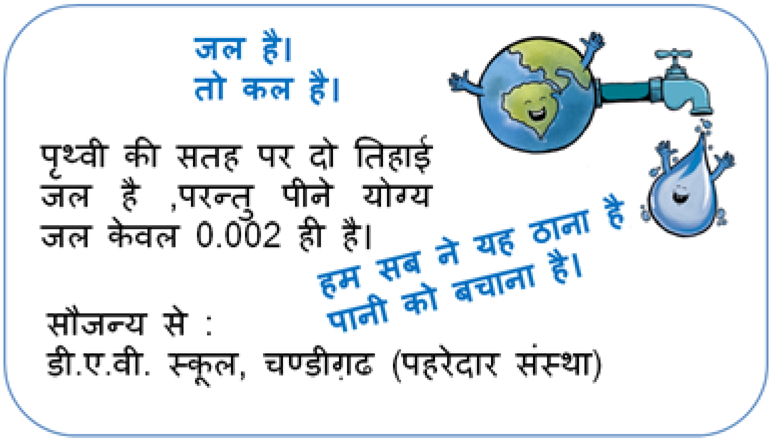

\2. विद्यालय की कलाविथि में कुछ चित्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

3. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्तवपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25-30 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

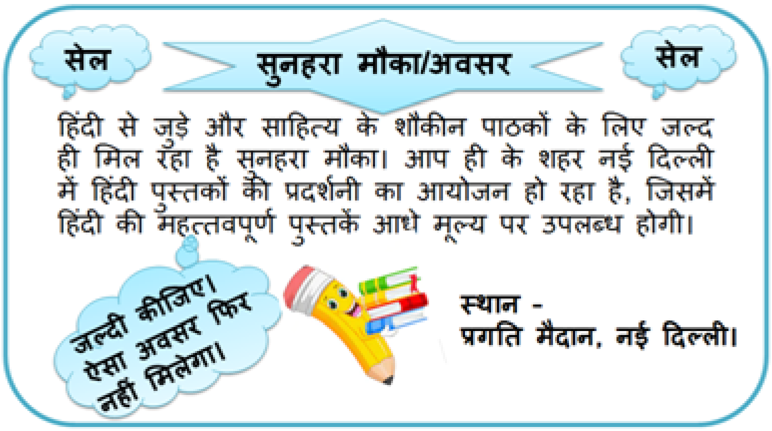

Related - Paragraph Writing in Hindi

4. अपने पुराने मकान के बेचने सम्बन्धी विज्ञापन का आलेख लगभग 25-30 शब्दों में तैयार कीजिए।

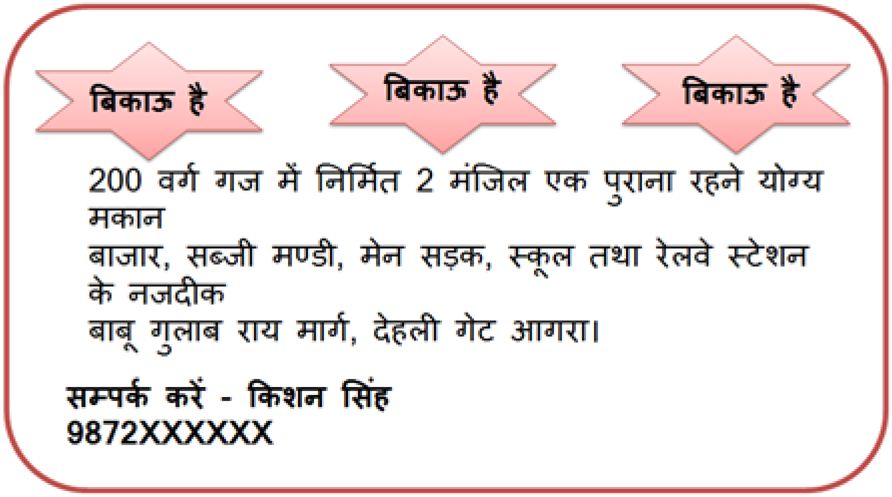

5. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा हस्तनिर्मित, टिकाऊ और उपयोगी सामग्री के विक्रय हेतु दिवाली मेले के लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

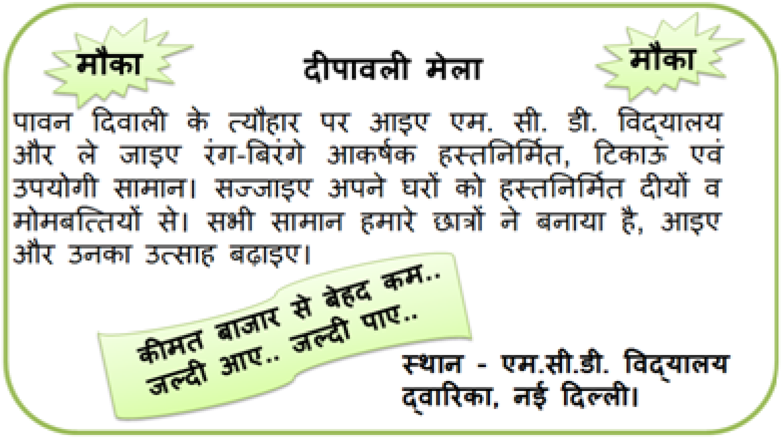

6. सड़क पर टहलते हुए आपको एक बैग मिला, जिसमे कुछ रुपये, मोबाइल फोन तथा अन्य कई महत्वपूर्ण कागज़ात थे। लगभग 25-30 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए कि अधिकारी व्यक्ति आपसे संपर्क कर अपना बैग ले जाए।

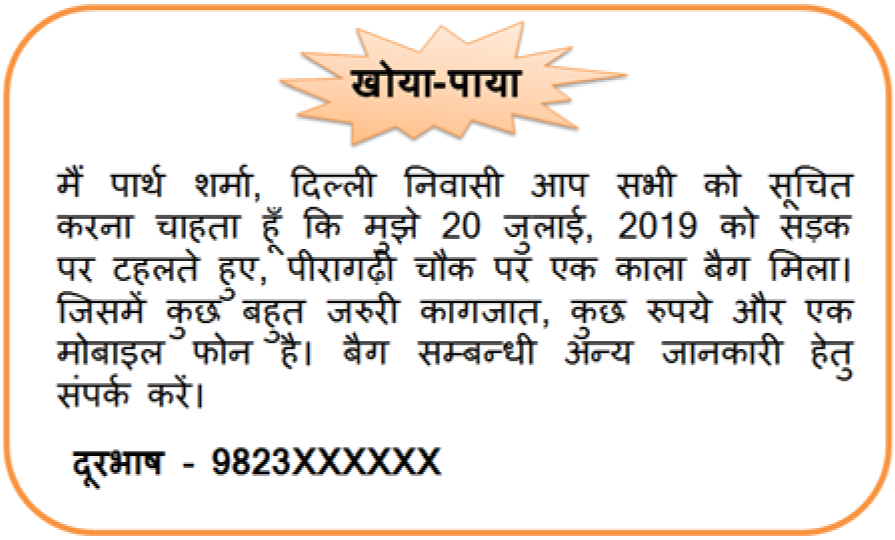

==